RNI Regd. No. GUJMUL/2016/68324
साल–९, अंक–१०, पृष्ठ–३६, मूल्य–₹ ३०, दिनांक : ०१ मार्च–२०२४
Year-9, Issue-10, Page-36, Price : ₹ 30, Date : 01 March - 2024

CRIME FORCE

.... *Always Alert, To Stop The Crime*

सत्यमेव जयते

ग्रीनलैंड में तेज गति से पिघलते हुए बर्फ से

महाविनाश का खतरा !

निजी अस्पतालों में वसुली जाती फीस से सुप्रीम कोर्ट खफा ।

ડૉ. સંજય પોપટ
(કન્સલ્ટન્ટ યુરોલોજીસ્ટ)

દત્તાત્રેય હોસ્પિટલ

-: સગવડતા :-

એક ઓપરેશન થીયેટર,
પાંચ બેડ,
ઇનહાઉસ લેબોરેટરી,
સોનોગ્રાફી,
મેડીકલ સ્ટોર,
સ્ત્રી વિભાગ,
યુરોલોજી ઓ.પી.ડી. વિભાગ

દત્તાત્રેય હોસ્પિટલ
૨, ભક્તિનગર સ્ટેશન પ્લોટ રોડ,
ભક્તિનગર સ્ટેશનની બાજુમાં,
રાજકોટ–૩૬૦૦૦૨,
ફોન: ૦૨૮૧–૨૪૬૨૩૧૩,
૨૪૬૨૨૭૮.

પારીતોષ હોસ્પિટલ

-: હોસ્પિટલની વિશેષતાઓ :-

બે ઓપરેશન થિયેટર,
૧૨ બેડની હોસ્પિટલ,
૨૪ કલાક મેડિકલ ઓફિસર,
ઇનહાઉસ લેબોરેટરી,
બેઝિક સોનોગ્રાફી
કિડની વિભાગ
પેટ–આંતરડા વિભાગ,
સ્ત્રીરોગ વિભાગ

પારીતોષ હોસ્પિટલ
જયંત કે.જી. સોસા. મેઇન રોડ,
શિવાનંદ આંખની હોસ્પિટલ પાછળ,
રાજકોટ–૩૬૦ ૦૦૪,
ફોન: ૦૨૮૧–૨૩૬૦૧૪૭,
સમય: સાંજે ૬.૩૦ થી ૮.૩૦

RNI Regd. No. GUJMUL/2016/68324
साल-९, अंक-१०, पृष्ठ-३६ मूल्य-₹३०
दिनांक : ०१ मार्च-२०२४
"Crime Force" (Monthly)
Volume-9, Issue-10, Price-₹30
1st March-2024, Page: 36

मालिक-प्रकाशक-मुद्रकश्री
रणजीतसिंह जादव
Mob. : 098250 63283

तंत्रीश्री
विजय साणथरा
Mob. : 075750 55333

एडमीन चीफ
विपुल ब्रह्मभट्ट
Mob. : 099247 04569

निवासी तंत्रीश्री
हसु कपासी
Mob. : 098792 27272

मुख्य तंत्रीश्री
हृषिकेश बोरसे
Mob. : 091371 31739

सहतंत्रीश्री
सतीष सोलंकी
Mob. : 092746 76760

सालाना लवाजम
भारत में : ₹ ३००/-
विदेश में : ₹ २५००/-

तंत्री स्थानसे...

लोकशाही की बिमारी: दल बदल

२०२४ का आम चुनाव नजदीक में है । देश के सब राजकिय दल अपने अपने दलों को मजबूत करने में लग गए हैं । इस के साथ ही लोकशाही को खोखला करने वाला मौसम भी पूरबहार में खिलता है ।

अपने लोकतंत्र में एमएलए और सांसदों द्वारा समय समय पर दल बदल करने की बात पुरानी हो गई है । भाजपा की सरकार सत्ता में है और लगातार वो मजबूत होती जाती है उसमें सामिल होने के लिए १२ मुख्यमंत्री और अनेकों नेताओ ने अपने पुराने पक्ष को छोडा है । हाल ही में हिमाचल प्रदेश में हुए राज्यसभा के चुनाव में कोंग्रेस के ६ नेताओ ने दल बदल कर के अपना स्वार्थ सिद्ध किया है और साथ में एक स्थिर चल रही सरकार को अस्थिर करने का प्रयास किया है । ऐसे तोड़ जोड़ के लिए सभी राजकीय दल जिम्मेवार है । क्योंकि यहां पक्ष छोड़नेवालो को अवसरवादी और पक्ष में आनेवाले को हृदय परिवर्तन कहते हैं । ऐसी आवा जाहि से ऐसे नेताओ को कुछ फर्क नहीं पड़ता, लेकिन देश के आम नागरिक के साथ धोखा होता है जो बिलकुल जायज नहीं है । लोकशाही में दल बदलना, वो भी सत्तापक्ष के लिए बिलकुल अच्छा नही है । लेकीन अभी जो दल बदल की घटनाएं हो रही है वो घोटाले से अपने आप को बचाने के लिए है वो बात तो तय है ।

गंगा में अपने पाप धुलने के लिए डुबकी लगाने वाले पापियों से कहीं गंगा मैली न हो जाए वो गंगा सफाई अभियान चलाने वाले को ध्यान में रखना चाहिए ।

विचारधारा में विश्वास, उसका पालन और उस में प्रतिबद्धता ही लोकशाही कि रक्षक है । लेकिन दल बदल की बार बार होती घटना ओ से ऐसा लगता है कि लोकशाही के लिए बिमारी बन गए दल बदल का कोई इलाज अभी तो नहीं दिखाई देता ।

मुख्य कार्यालय
राज कोम्प्लेक्ष, स्टार प्लाझा के सामने,
फुलछाब चौक, राजकोट - ३६० ००१

Website : www.crimeforce.in
E-mail: crimeforce9@gmail.com

London (U.K.) Bureau Office
NISHANT K. JANI
Mo. +44 7999470980
43 Bowrons Ave, Wembley, HA0 4QS London (U.K.)

Maharashtra Bureau Office
Chetan V. Solanki
Mo. +096642 78700
Hrishikesh M. Borse
Mo.+09137131739
Frist Floor, Dhan Mension, Opera House, Mumbai-400002

Mumbai - Bureau Office
Akashbhai P. Shah
Mo.+096196 70007
Arham Group
Office No.24, 1st Floor, 110-Kakakuwa Bldg., 3rd Bhoiwada Corner, Bhuleshwar, Mumbai-400002

Surat - Bureau Office
Ramjibhai N. Panseriya
Mo. 97125 74032
Vinod M. Lavri
Mo. 9825112244
Plot No. 1 Amul Society Near Shreeram Marbal bhatar, Surat-394510

Baroda - Bureau Office
Yagnesh Thakkar
Mo. 099255 55400
Shailesh Thakkar
Mo. 063548 60273
Think Overseas
301 Annapurna Complex, Opp. Makarpura Police Station, B/s Aangan Tower, Manjalpur, Vadodara-390011

Ahmedabad - Bureau Office
Hitesh P. Prajapati
Mo. +084600 03121
Parth P. Shah
Mo.+097269 06767
328 Sangath Mall, Opp. Vishwakarma Engg. Collage, Motera, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005.

मुद्रण स्थान : श्री हरि ओफसेट, आरती अेस्टेट, ढेबर रोड (साउथ), राजकोट-३६०००२

CRIME FORCE HELPLINE No. : 092746 76760

CRIME FORCE
सत्यमेव जयते

अनुक्रमणिका...

राजकीय	05
ईन्टरनेशनल माफीया स्टोरी	07
वैश्विक टेरर...	09
सिविल वोर	12
अनसंग हिरो	15
मुंबई स्पेश्यल	19
ग्लोबल वोर्मिंग	22
शोध-संशोधन	25
ओफबिट	26
स्वास्थ्य	28
मुंबई के अंडरवर्ल्ड की खोफनाक बातें	30

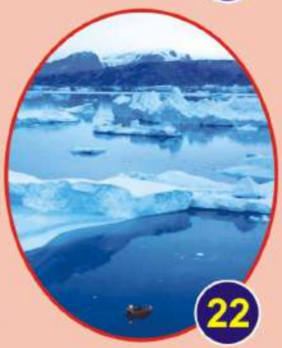

‘शाइनिंग इंडिया’ से ‘मोदी की गारंटी’ तक।

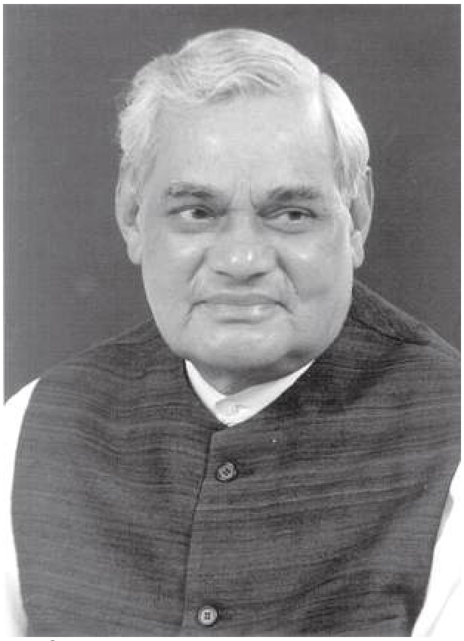

राजकीय

◆ रणजीतसिंह जादव ◆

देश में लोकसभा चुनाव नजदीक आ रहे हैं। राजकीय दलो भी अपने-अपने उम्मीदवारों की सूची जाहिर करने में लगे हैं। नरेंद्र मोदी भी एनडीए को ज्यादा मजबूत करने में लगे है। दूसरी ओर विरोध पक्षों का इंडिया महागठबंधन भी अपने दलों के लिए सीट बंटवारे में लगे हुए हैं।

नरेंद्र मोदी ने २२/ १ /२०२४ को राम मंदिर का उद्घाटन करके देश-विदेश के लोगों को बता दिया कि वह जो कहते हैं वह करते भी हैं। हमारे देश के इतिहास में २२/१/२०२४ की तारीख सुनहरे अक्षरों में लिखी जाएगी, क्योंकि ५०० से ज्यादा साल से भी रामलल्ला के मंदिर की लड़ाई चल रही थी।

लोकसभा चुनाव जब सर पे है तब हम पर बात करेंगे २००४ से २०२४ तक (अटल जी से नरेंद्र मोदी) के कार्यकाल के बारे में।

२००४ के लोकसभा चुनाव से पहले बड़ा प्रधान अटल बिहारी वाजपेई ने दो भूल की थी। पहली, उसने चुनाव समय से पहले करने का निर्णय लिया था। दूसरी, अटलजी ने प्रमोद महाजन और दूसरे बीजेपी नेताओं द्वारा प्रस्तावित ‘‘इंडिया शाइनिंग‘‘ स्लोगन को अपना लिया था। क्या २००४ के शुरुआत में भारत चमक रहा था ? यह बात सच है कि तब हमारा अर्थतंत्र तेजी से बढ़ रहा था। मुद्रास्फीति कम होकर ३.७% पर थी। बेकारी भी कम थी। वाजपेई अपने सफल प्रधानमंत्री पद के समय में छठवें साल में थे। मार्च १९९८ में उसने एनडीए सरकार बनाने के लिए एक बहुपक्षीय गठबंधन रचा था। प्रधानमंत्री के पद संभालने के थोड़े ही समय में अटल जी ने १९९८ में ही परमाणु परीक्षण (पोखरण-२) का आदेश दिया था। अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन द्वारा लगाए गए कड़े प्रतिबंदो के बाद भी भारत मजबूत और दृढ़ बन रहा था।

पाकिस्तान ने जुलाई - अगस्त, १९९९ कारगिल युद्ध छेड़ा था तब भी अटल जी की सरकार ने मजबूती से उसको हराया था। तब पाकिस्तान के तात्कालिन प्रधानमंत्री

नवाज़ शरीफ़ को युद्ध समाप्त करने के लिए वाशिंगटन दौड़ना पड़ा था । सितंबर – अक्टूबर,१९९९ में हुए लोकसभा चुनाव में कारगिल विजय से प्रभावित मतदाताओं ने भाजपा नेतृत्व में बने एनडीए गठबंधन को ५ साल के लिए जनादेश दिया था । जनवरी,२००४ के शुरुआत में जब भारतीय अर्थतंत्र दशकों में सबसे तेज गति से बढ़ रहा था, देश में मुद्रास्फीति भी कम हो रही थी, बेकारी भी कम हो रही थी और सफल वायटूके ट्रांसफॉर्मेशन के बाद देश का इन्फोटेक सेवा उद्योग भी रफ्तार पकड़ रहा था, तब प्रमोद महाजन ने अटल जी को कहा कि, लोकसभा चुनाव समय से पहले करने का यह सही समय है । अटल जी को पूरा भरोसा नहीं था फिर भी प्रमोद महाजन और भाजपा के दूसरे नेताओं ने कहा था की, रफ्तार पकड़ता अर्थतंत्र और राजकीय स्थिरता से भाजपा को १८२ बैठकों को की अपनी संख्या में बढ़ोतरी करने का मौका दिया है, तब अटल जी ने उन लोगों की बात मान ली ।

अटल जी को मनाने के बाद पार्टी ने तुरंत ही ''इंडिया शाइनिंग'' का स्लोगन दिया था और एनडीए – २ के ५ साल के कार्यकाल के अंत से ६ महीने पहले अप्रैल में चुनाव का आयोजन किया । पार्टी का यह निर्णय गलत साबित हुआ । भाजपा की १८२ बैठके कम होकर १३८ पर अटक गई थी । सोनिया गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस को १४५ बैठक मिली थी । डाबेरी और सेकुलर साथी पक्षों के ५९ संसद के समर्थन से कांग्रेस ने २००४ में गठबंधन सरकार बनाई । यह सदमे से अटल जी बाद में कभी भी स्वस्थ नहीं हुए और पार्टी का नेतृत्व आडवाणी के पास आया ।

तब गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी गांधीनगर से यह सब घटनाओं पर अपनी नजर बनाए हुए थे । अक्टूबर,२००१ में मोदी को गुजरात के मुख्यमंत्री बनाया गया था । १२ साल के बाद २०१४ में मोदी ने लोकसभा चुनाव में भाजपा को जीत दिलाई थी । अब २०२४ की लोकसभा चुनाव

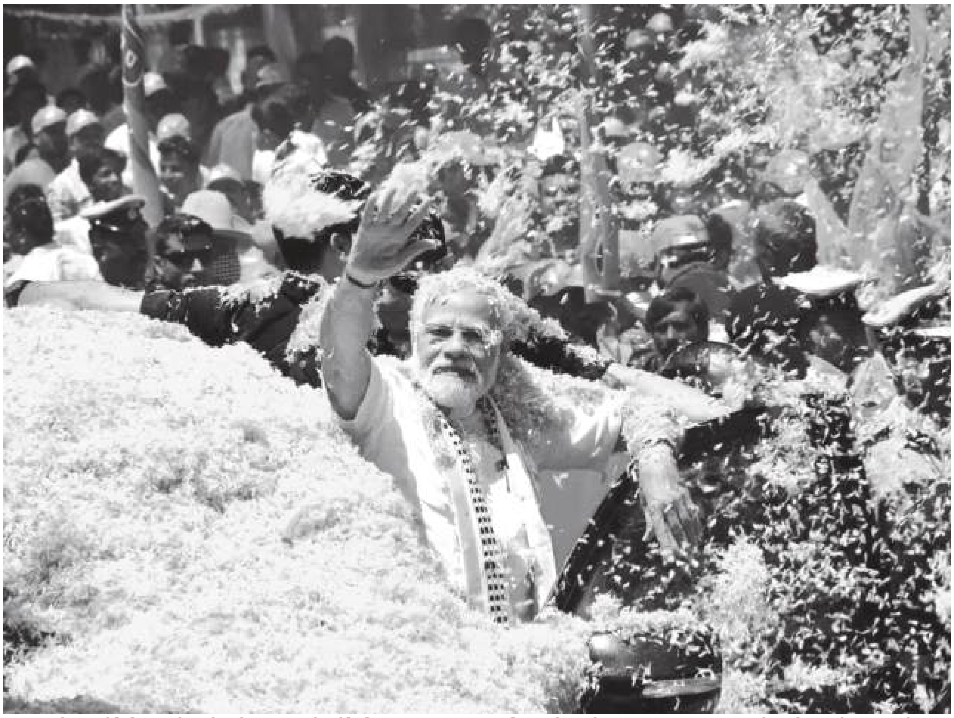

नजदीक में है । तो मोदी जानते हैं कि २००४ में बाजपाई की सरकार के पराजय में सबसे बड़ी भूमिका जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास की थी । लेकिन अब २०२४ की साल २००४ की साल नहीं है और अब मोदी है बाजपेई नहीं है । इसलिए अब मोदी ऐसा कोई कदम लेना नहीं चाहते जिससे भाजपा को पराजय का सामना करना पड़े । मोदी के लिए हर चुनाव ''करो या मरो'' जैसी होती है और २०२४ के चुनाव भी उस से अलग नहीं होंगे । मोदी यह भी जानते हैं कि २०१९ में उत्तर पश्चिमी १० बड़े राज्यों में भाजपा ने १५१ में से १४१ बेठके जीती थी । लेकिन अब जब विपक्षो में बैठकों के बटवारे का मामला चल रहा है तब ऐसी क्लीन स्विप का पुनरावर्तन करना एक बड़ा मुद्दा बन सकता है ।

इसी वजह से पार्टी को यूपी में बैठकों की संख्या ६२ से बढ़कर ७० से ज्यादा करनी होगी, तेलंगाना ४/१७, तमिलनाडु ०/३९ और असम ९/१४ में बदलाव वाला प्रदर्शन उल्लेखनीय है । मोदी का मानना है कि ईस साल के लोकसभा चुनाव में भाजपा अकेले अपने दम पर ३७० और एनडीए गठबंधन के साथ मिलकर ४०० से ज्यादा बैठक को की जीतने का प्रयास करेगी । ऐसा होना बहुत कठिन है लेकिन २०१४ में १८२ में से २८२ बैठक । और २०१९ में ३०३ बैठके और अब फिर से ३०० से ज्यादा बैठकों का लक्ष्य मोदी की दृढ ईच्छाशक्ति की पहचान कराता है ।

अभी जब विपक्ष में एकता नहीं है और नरेंद्र मोदी की सरकार ने अपने अभी तक के कार्यकाल में जो एक समय असंभव लगने वाले कश्मीर से धारा ३७० की नाबूदी,राम मंदिर का निर्माण, मुस्लिम महिलाओं की जिंदगी बेहतर बनाने के लिए तीन तलाक के कायदे की नाबूदी, देश के नागरिक को बिना जाति, बिना भेदभाव से अच्छे रोजगार, मकान, आरोग्यलक्षी सुविधाओं उपलब्ध करने का जो काम किया है उस को देख कर तो ऐसा लगता है कि मोदी का ४०० प्लस वाला लक्ष्य हासिल करने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी ।

लेकिन मतदाताओ के मन में क्या चल रहा है वह कोई नहीं जान पाया है । असली पता तो जब चुनाव का रिजल्ट आएगा तभी चल पाएगा कि किसको कितनी बैठक मिली है ।

खूंखार अमेरिकन माफिया डॉन

अल केपोन

दोस्तों हमने पिछले अंक में खतरनाक इटालियन माफिया डॉन गेम्बिनो के बारे में बताया था। आज हम विश्व के ऐसे ही एक खतरनाक और खूंखार अमेरिकन माफिया डॉन अल केपोन के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी देंगे।

अल केपोन उर्फ आल्फोंस केपॉन ऊर्फ स्कार फेस का जन्म १७,जनवरी १८९९ के दिन अमेरिका के न्यूयॉर्क राज्य के ब्रुकलिन शहर में हुआ था।

केपोन के माता-पिता १८९७ में नेपल्स से यूएस में स्थाई हुए थे। नौ संतानों में अल केपोन चार नंबर का संतान था। उसने अपना बचपन ब्रुकलिन में ही बिताया था। जब वह स्कूल में छठी कक्षा में था तब टीचर को मारपीट करने की वजह से उसको स्कुल से निकाला गया था। बाद में उसने कैंडी स्टोर कर्मचारी, बोलिंग एली पिन बॉय, दारू खाने प्लांट में मजदूर, बुक बाईनडरी शॉप में कटर के रूप में अनेकों प्रकार की नौकरी कि थी। उसके बाद केपोन एक 'किड्स गैंग' जो दक्षिण ब्रुकलिन रिपर्स और फोर्टी थीव्स नाम के पहचानी जाती थी उसमें शामिल हो गया। न्यूयॉर्क में उस समय यह किड्स गैंग छोटे-मोटे गुनाहों और छोटे पैमाने पर तोड़फोड़ के लिए पहचाने जाते गुनहगार बच्चों के बैंड के नाम से प्रचलित थी।

ईन्टरनेशनल माफीया स्टोरी

◆ हसु कपासी-अहमदाबाद ◆

इस दौरान केपोन जेम्स स्ट्रीट नाम की बॉयज गैंग में शामिल हो गया। इसका लीडर टोरियो था जो बाद में केपोन का आजीवन राहबर बना था। टोरियो ५ पॉइंट गेंग के साथ जुड़ा हुआ था। १६ साल की आयु में ५ पॉइंट गुट का सदस्य बना। उसने हार्वर्ड इन, येल के वेश्यालय, सलून में बार टेंडर के रूप में काम किया था। यह येल यानी की अभिलाषी मोबस्टर, फ्रांसिस्को आचोले (जोन टोरियो का साथीदार,जिनको लोग फ्रैंकी येल के नाम से भी जानते थे)।

जब तक केपॉन २१ वर्ष का हुआ तब तक तो वो अनेक हिंसक वारदातों में शामिल हो गया था। हार्वर्ड इन में युवानी के जुनून में फ्रैंक गेलुसियो नाम के एक टपोरी ने केपोन पर छूरी या ब्लेड से हमला करके उसके बाएं गाल पर काटने का निशान बना दिया था क्योंकि केपोन ने गेलुसियो की बहन के बारे में गन्दी बातें की थी। तब से केपोन 'स्कार फेस' के नाम से पहचाना जाता था। केपोन ने उसके पड़ोस में रहने वाले और क्रेप्स खेल के विजेता की हत्या कर दी थी,क्योंकि उसको विजेता ने जीती हुई राशि चाहिए थी। इस वारदात के बारे में पुलिस ने केपोन की पूछताछ की थी लेकिन हत्या के कोई ठोस सबूत न होने के कारण उसको गिरफ्तार नहीं कर सके।

दूसरी एक घटना में केपोन ने उनके

सामने वाली हरिफ गैंग के छोटे स्तर के सदस्य पर हमला करके उसको मरने के लिए छोड़ कर चला गया था। इसलिए गुस्से में आकर 'व्हाइट हैंड' के सरगनाओ ने इस बात का बदला लेने का तय कर लिया। इस बात की येल को सूचना मिलते ही उसने केपोन,उसकी पत्नी और छोटे बच्चों को जॉनी टोरियों के साथ काम करने के लिए शिकागो भेज दिया था। टोरियो १९०९ में न्यूयॉर्क से शिकागो गया था क्योंकि शिकागो में क्राइम बॉस बिग जिम कोलेसियो की निगरानी में बड़े-बड़े वेश्यालयों के व्यापार में उसका हाथ बटा सके। १९१९ में केपोन के शिकागो पहुंचने के थोड़े समय मे ही येल को बिग बॉस बनना था इसलिए उसने केपोन के साथ मिलकर कोलेसियो की हत्या कर दी। लेकिन इस धंधे में प्रतिबंध आने के बाद बूट लेगिंग के ऑपरेशन चालू हो गए और उसको इस धंधे में मबलक काली कमाई होने लगी। १९२४ में केपोन, जो हावर्ड की हत्या के लिए जिम्मेवार था, क्योंकी बीते दिनों में हार्वर्ड केपोन के एक दोस्त की हत्या में शामिल था। विलियम मेकविगिन एक आक्रमक एडवोकेट था। लेकिन यह हत्या के मुख्य साहेद ने केपोन के डर के मारे और अपनी मानसिकता गवां देने से उसके विरुद्ध में जुबानी ना दे सकने की वजह से केपोन को दोषित ठहराने में नाकामयाब रहा और सजा ना दिलवा सका। इसी साल में बाद में टोरियो और अल केपोन ने येल और उसके साथीदारों को उसकी फूलों की दुकान में इसलिए आने दिया कि वह एक गैंग लीडर डियोन ओ'बानियन की हत्या कर सके।

१९२५ में डियोन ओ'बानियन के साथीदारों हमी वेईस और जॉर्ज (बग्स) मोरन द्वारा टोरियो की हत्या का असफल प्रयास किया गया था।

जेल की सजा काटने के बाद टोरियो इटली वापस आया तब शिकागो में केपोन जुआं, वेश्यागिरी, बूट लेगिंग का रैकेट चला रहा था और अपने हरिफ गैंग के सदस्यों को बंदूक तान के डरा धमकाकर अपना साम्राज्य बढा रहा था। १९२६ में केपॉन और उनके साथीदारों द्वारा अपनी हरिफ गैंग पर गोलीबारी करते समय अनजाने में ही मेक विगिन की हत्या होने से तीन महीने के लिए केपोन अंडरग्राउंड हो गया था। इस घटना में ऐसा हुआ था कि एक शाम मेक विगिन अपने बचपन के दो दोस्त के साथ शराब पीकर बार से बाहर निकल रहा था, उस समय ही वहां पर केपोन और उसके गुर्गो द्वारा हरीफ गैंग के सदस्यों पर गोलीबारी हो रही थी, अचानक दोनों गुटों के बीच में आने से गोली लग गई थी और वह अनजाने में ही मर गया। फिर एक बार किसी वजह से केपोन जेल जाने से बच गया था। १९२७ में वो १०० मिलियन डॉलर्स की संपत्ति का मालिक गिना जाता था।

१४, फरवरी १९२९ के दिन उत्तर शिकागो गांव में एक गराज विस्तार में भारी गोलीबारी की घटना में बग्स मोरन गैंग के सात सदस्यों मारे गए थे। इस घटना ने उसे समय के गुनाहखोरी के इतिहास में कुख्यात सेंट वेलेंटाइन डे (लहु से भरि घटना)के तौर पर गिना जाता है।

१९२९ मे फिलाडेल्फिया की जेल में गुप्त तरीके से हैंडगन छिपाके रखने के लिए केपोन को १० महीने जेल में रखा गया था। ५, जून १९२१ के दिन केपोन को १९२५ से १९२९ तक के सालों में असली आय छुपाने के लिए आयकर कार्यालय ने दोषित ठहराया था। बाद में केपोन और उनके साथीदारों को खास ठराव और प्रोहिबिशन एक्ट के खंडन के लिए १९२२ से १९३२ दरमियान अक्टूबर में २३ में से तीन गुनाहों में ११ साल की सजा और ५०,००० डॉलर का जुर्माना और न्यायालय के खर्च की वसूली की गई थी। १९३२ में केपोन को अटलांटा की जेल में रखा गया था।

लेकिन अगस्त १९३४ में केपोन को नई निर्माण की गई अलकाट्राज जेल में ट्रांसफर किया गया था। नवंबर १९३९ मे पेरेलिसीस (सिफलिस के अंतिम दोर) से सामान्य बिगाड़ से वह दर्द को झेल रहा था। बाद में उसको जेल से रिहा किया गया था। और वो बाल्टीमोर हॉस्पिटल में दाख़िल हुआ था। थोडे समय बाद केपोन अपनी फ्लोरिडा एस्टेट में से मुक्त हुआ था। जहां पर उसकी मजबूर और निर्बल व्यक्ति के रूप में कार्डियाक अरेस्ट से २५, जनवरी १९४७ में मौत हो गई और एक खूंखार माफिया डॉन का अंत हो गया।

रहस्यमयी महिला आतंकी
आफिया सिद्दीकी

वैश्विक टेरर...

◆ रामजी पानसेरीया-सुरत ◆

हालके समय में विश्व में अनेक देशों में किसी न किसी आतंकवादी गुट सक्रिय है और पूरे विश्व में अराजकता फैलाने के लिए अलग-अलग देश में अलग-अलग आतंकी गूटो द्वारा बम ब्लास्ट, गोलीबारी, सेलिब्रिटीज को अगवा करना जैसे आतंकी प्रवृत्तियां की जाती है।

जनवरी-२२ में अमेरिका के टेक्सास राज्य के कोलीविले नाम के शहर में यहूदी चर्च में एक सशस्त्र हमलावर ने यहूदी धर्म गुरु समेत चार यहूदियों को बंधक बनाया था और उन लोगो को रिहा करने के लिए अमेरिका की जेल में ८६ साल की सजा भुगत रही आफिया सिद्दीकी नाम की अलकायदा की आतंकवादी महिला को रिहा करने की मांग की थी। इस घटनाने पूरे विश्व में बहुत ही चकचार जगाई थी। बाद में ११ घंटे के बाद बंधको को रिहा करवाया गया था और सुरक्षा कर्मियों ने बंधक बनाने वाले को गोली मार के खत्म कर दिया था। यह मारा गया आतंकवादी आफिया सिद्दीकी का भाई होने की अफवाएं फैल गई थी। वास्तव में यह शख्स आफिया का भाई नहीं था किंतु मलिक फैसल अकरम नाम का ब्रिटिश नागरिक होने का सामने आया था। आफिया को रिहा करने के लिए पहले भी १०- १२ घटनाएं सामने आई थी। तालिबानो और अल कायदा और कई आतंकी गुटो बीते सालों में बंधक बनाए गए अनेक विदेशी नागरिकों, विदेशी एड वर्कर्स एवं पत्रकारों कि रिहाई के बदले में आफिया को रिहा करने की मांग करते रहे थे। जनवरी २२ की इस घटना से एफबीआई द्वारा एक समय पर जिसको मोस्ट वांटेड टेररिस्ट जाहिर किया था ऐसी यह महिला आतंकवादी फिर से चर्चा में आ गई थी। असल में आफिया पाकिस्तानी नागरिक है। उनके पिता न्यूरोसर्जन और माता शिक्षिकाथी। आफियाने अमेरिका की ब्राइंडेश यूनिवर्सिटी से न्यूरोसाइंस में पीएचडी की डिग्री हासिल की थी। उनका विवाहित जीवन और अफगानिस्तान में हुए उनकी गिरफ्तारी हुई तब तक की माहिती बहुत ही पुरानी और जानी पहचानी है। फिर भी इस महिला के बारे में अनेको भेदभरम वाली कहानीयां प्रचलित होती रहती है। लेकिन जब केथी स्टॉक क्लर्क और एड्रियन लेवी नाम के दो इन्वेस्टिगेटिव पत्रकारों ने न्यूयॉर्क ट्रेड सेंटर पर हुए हमले से लेकर ओसामा बिन लादेन के एनकाउंटर तक के घटनाक्रम की कई बाहर ना आई माहितीवाले २०१७ में प्रकाशित हुआ 'द एक्साइल ! द फ्लाइट ऑफ़ ओसामा बिन लादेन 'नाम के पुस्तक में आफिया के साथ जुड़ी हुई नई माहितियों को उजागर किया तब से रहस्य और गूढ़ बन गया है। इसमें दर्शाया गया था कि हमले का मास्टरमाइंड खालिद शेख मोहम्मद की २८ फरवरी, २००३ को रावलपिंडी से मिलिट्री हेड कवार्टर के नजदीक आया हुआ पाकिस्तान आर्मी के आदिल नामक मेजर के पिता के घर में गिरफ्तारी की गई थी और उसकी पूछताछ की गई तब उसने आफिया की माहिती दी थी। इस बताई गई माहिती के बाद आफिया की छानबीन शुरू हो गई थी।

आफिया उस समय कराची में अपनी माता के साथ रहती थी। लेकिन पुलिस के आने से पहले वह अपने तीन संतानों के साथ टैक्सी में बैठकर एयरपोर्ट के लिए निकल गई थी। उस दिन से आफिया और उसके तीन संताने गुम हो गए थे। दूसरी ओर वही दिन में पाकिस्तान ने एक महिला की गिरफ्तारी की ऐसा सत्तावार तौर पर जाहिर किया था। लेकिन बाद में पाकिस्तान सरकार और एफबीआई दोनों ने ऐसी कोई गिरफ्तारी का खंडन किया था। उसके आफीया का कोई अता पता नहीं था। इस बात को ५ साल गुजरने के बाद २२ जून, २००८ को रात को अचानक वह उसके मामा सम्स ऊल हसन फारूकी के इस्लामाबाद के निवास पर पहुंची थी। आफिया के बताए अनुसार उसको ५ साल तक अलग-अलग गुप्त डिटेंशन सेंटर पर रखकर उन पर बहुत क्रूर तरीके से अत्याचार किया गया था। बादमें आईएसआई और सीआईए के डबल एजेंट के तौर पर अल कायदा में घुसने की शर्तो पर उसे रिहा किया गया था और बताते हुए कहा कि उसको एक बस में अफगान बॉर्डर के नज़दीक ट्राइबल एरिया में ले जाते थे और वहां मौका पाके मामा के घर भागकर पहुंची थी। आफिया को ऐसी धमकी दी गई थी कि वह अगर विश्वासघात करेगी तो उसके संतानों की हत्या कर दी जाएगी। उसने तालिबानों के पास अफ़गान जाने के लिए अपने मामा से मदद मांगी लेकिन ऐसी बातों से तंग आए मामा ने अपनी बहन, आफिया की माता को बुलाया। लेकिन आफिया की मां ने साफ-साफ बोल दिया की आफिया के कारण उनका पूरा परिवार मुश्किल में आ सकता है इसलिए हमें आफिया से कोई रिश्ता नहीं रखना है ऐसा कहके अपने को आफिया से अलग कर दिया। उसी दिन, रात को सब लोग सो रहे थे तब देर रात से आफिया वहां से कहीं चली गई थी।

उस दरमियान १८ जुलाई, २००८ को

अफगान पुलिस ने चेहरे पर बुरखा लगी हुई एक महिला को मीडिया के सामने पेश किया था। उस महिला के साथ एक १३ साल का बच्चा भी था। पुलिस के बताए अनुसार उस महिला के पास स्फोटक पदार्थ बनाने का बड़ा जथ्था मिला था और उसके बाद वह महिला को पुलिस कस्टडी में एक परदे के पीछे रखा गया था जहां एक अफगान अनुवादक और दो सैनिकों के

न्यूयॉर्क अदालत के फैसले के बाद आफिया पाकिस्तान की बेटी, इस्लाम के गौरव और अमेरिका के अन्याय की प्रतीक बन गई थी। अनेक संगठनों उसके प्रचार साहित्य और पोस्टर में आफिया की तस्वीर का उपयोग करते थे। उसकी रिहाई के लिए पूरी दुनिया के मानव संगठने लड़ाई लड़ रहे हैं।

साथ एफबीआई के चार एजेंट उसकी पूछताछ के लिए आए थे ।लेकिन उसकी पूछता शुरू हुए उसके पहले ही जमीन पर रखी हुई M4 असॉल्ट राइफल्स उस महिला ने उठाकर दो राउंड फायर किया था ऐसा पुलिसकर्मियों ने बताया था। अपने बचाव में पुलिस ने उस महिला के पेट में दो गोली मार दी थी। जख्मी महिला को सारवार के लिए अमेरिका ले जाया गया था। इस घटना के ११ दिन बाद उस महिला को एफबीआई ने आफिया सिद्दीकी होने का घोषित किया था। यह घटना से कहानी में नया ट्विस्ट आया। आफिया के साथ मिला वह बालक उनका पुत्र मोहम्मद अहमद होने का और उसको सुसाइड बॉम्बर बनाने के लिए तालिम दी जानेवाली थी ऐसा अफगान पुलिस ने बताया था। दूसरी ओर आफिया की गिरफ्तारी के विरोध में पाकिस्तान में हजारों लोग रास्ते पर उतर आए थे। मामला गंभीर हो जाने को अफगान पुलिस द्वारा बालक का कब्जा मामा फारूखी को दिया गया। मामा फारुखी को शक था कि वह बालक आफिया का पुत्र नहीं है। मामा फारूखी ने बालक को विश्वास में लेने के बाद पूछताछ

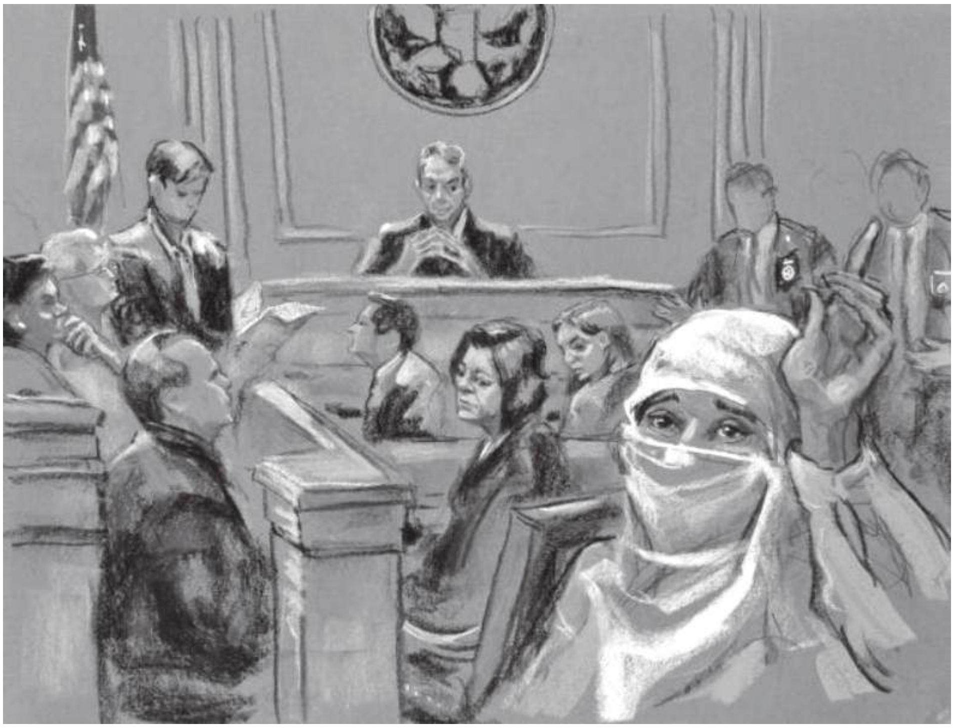

की तो बालक ने सारी पोल खोल दी। उसके कहने ने के अनुसार उसका नाम अली हसन था और वह मनशेरा गांव में रहता था। २००५ की साल में आये भूकंप में उसके माता-पिता की मौत होने के बाद पाकिस्तान पुलिस ने उनको २ साल तक चिल्ड्रन जेल में रखा था। उस बालक ने बताया कि उसे मीडिया के सामने रूबरू किया गया तब पहली बार उसने आफिया को देखा था। अली हसन ने और बताया कि आईअेसआई ने उसके पहले भी कई बार इसी तरह डमी बालक के तौर पर उपयोग किया था। इन सब घटना के दौरान जनवरी २०१० में न्यूयॉर्क की अदालत में आफिया पर केस में सुनवाई शुरू हो गई थी। आफिया ने अदालत के सामने यह बात करते हुए कहा कि उसको ५ साल के लिए अलग-अलग गुप्त जगह पर बंधक बनाकर रखा हुआ था और उसके साथ हैवानियत भरे अत्याचार किए गए थे। उसने यह भी मानने को मना कर दिया कि उसने कोई गोलीबारी की थी। एफबीआई के फायर आर्मी एक्सपर्ट ने भी घटना स्थल पर से M4 एसोल्ट राइफल में से गोलीबारी होने का इनकार कर दिया था। जिसकी राइफल्स में से आफिया ने गोलीबारी की वह सैनिक और घटना स्थल के साक्षी की जुबानी में भी समानता नहीं थी। अंत में २ फरवरी को अदालत ने आफिया को हत्या की कोशिश, फर्ज पर रहैं अफसर पर हमला जैसे गुनाहों में दोषित करार देते हुए ८६ साल की जेल की सजा सुनाई थी। यहां गौर करने लायक बात यह है कि अमेरिका ने जिसे मोस्ट वांटेड, मोस्ट डेंजरस टेररिस्ट बताया था वह आफिया पर आतंकवादी, अमेरिका पर हुए हमले की योजना और आतंकवादियों को मदद पहुंचाने का एक भी तहोमत नहीं लगाया गया था। आफिया के वकील ने उस दिन को अमेरिका के न्यायतंत्र का काला दिन बताया था। इस सजा के विरोध में पाकिस्तान में कई जगह पर प्रोटेस्ट किया गया था। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने तो आफिया को रिहा करने की मांग भी की थी। दूसरी ओर अप्रैल, २०२० में कराची में एक घर के सामने मिली हुई एक बच्ची आफिया की बेटी मरियम होने का पुलिस ने दावा किया था। आफिया के तीसरे संतान के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है। न्यूयॉर्क अदालत के फैसले के बाद आफिया पाकिस्तान की बेटी, इस्लाम के गौरव और अमेरिका के अन्याय की प्रतीक बन गई थी। अनेक संगठनों उसके प्रचार साहित्य और पोस्टर में आफिया की तस्वीर का उपयोग करते थे। उसकी रिहाई के लिए पूरी दुनिया के मानव संगठने लड़ाई लड़ रहे हैं।

कराची की एक अति तेजस्वी न्यूरो साइंटिस्ट असल में २००३ से २००८ तक कहां थी? क्या वह अल कायदा की अग्रिम क्रमकी आतंकवादी थी या छोटे पैमाने पर काम करती थी? या एजेंट थी ? उनके संतानों के बारे में आज भी भेद भरम रहे हैं। अमेरिका ने दी गई माहिती सच है या उसके पर भी गलत बयान दिया गया है यह सब बातें शायद कभी भी बाहर नहीं आ पायेगी।

अंत में २ फरवरी को अदालत ने आफिया को हत्या की कोशिश, फर्ज पर रहैं अफसर पर हमला जैसे गुनाहों में दोषित करार देते हुए ८६ साल की जेल की सजा सुनाई थी। यहां गौर करने लायक बात यह है कि अमेरिका ने जिसे मोस्ट वांटेड, मोस्ट डेंजरस टेररिस्ट बताया था वह आफिया पर आतंकवादी, अमेरिका पर हुए हमले की योजना और आतंकवादियों को मदद पहुंचाने का एक भी तहोमत नहीं लगाया गया था।

सीरिया में हुए क्रूर नरसंहार की कलेजा चीर देने वाली कहानी

अब तक पूरे विश्व में न जाने कितने युद्ध और भीषण जंग हुई इसमें कई देशों ने अपने लाखों सैनिकों को खोया । युद्ध में जितने भी देश होते हैं उसमें संहार तो होता ही है । युद्ध मतलब बरबादी । विश्व में कई सरमुखत्यार हो गए, जिसने अपने निजी आनंद और अपने पशु समान मानसिकता को बरकरार रखने के लिए अन्य प्रजा या लोगों को सामूहिक रूप से मौत के घाट उतार कर नर संहार किए हैं ।

जर्मनी में हिटलर के नाज़ी शासन दौरान कॉन्सनट्रेसन कैंपस में हुए अत्याचारों तो विश्व के सामने आ गए थे । लेकिन पहली बार सीरिया में हुए बसर अल असद के शासनकाल दरमियन हुए सिविल वॉर के समय बेगुनाह निर्दोष नागरिकों और आंदोलन कर्ताओं पर हुए पाशविक क्रूरता के पूरे सबूत सामने आये है । इस जुल्मों में शामिल सीरिया के अनवर रासलन नामक एक उच्च पूर्व लश्करी अफसर को जर्मनी के न्यायालय ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई है । इस मुकदमे की सुनवाई के वक्त पेश किया दस्तावेजी सबूत और पीड़ितों के जुबानिया रोंगटे खड़े कर देने वाली है । सीरिया में स्प्रिंग के समय २०११ में बसर अल असद के शासन के विरुद्ध में अभूतपूर्व आंदोलन हुआ था । फ्री सीरियन आर्मी, सलाफी जिहादी ग्रुप, सीरियन डेमोक्रेटिक फोर्स, आईएसआईएल समेत ४ संगठनों के हजारों सशस्त्र कार्यकरो रास्ते पर आने से असद का एक चक्रि शासन पर संकट पैदा हो गया था । इस बगावत को नाकाम बनाने के लिए पुलिस और मिलिट्री के जवानो बगावतकर्ता ओ पर टूट पड़े थे । सीरिया के

सीरियन राष्ट्रपति-बसर अल असद

ईस सरमुखत्यार को रशिया और ईरान का समर्थन था । ईरान में शासनकर्ताओ कि रहम नजर तले विकसित हुआ हेझबुल्लाह नाम के आतंकवादी संगठन के आतंकियों सीरिया सरकार की सहाय के लिए आ गए थे । रशिया ने आंदोलनकारी पर अनेक बार एयर स्ट्राइक की थी । असद ने खुद के ही नागरिकों पर केमिकल वेपंस का उपयोग किया था ।

सिविल वोर

◆ हितेष प्रजापति-अहमदाबाद ◆

दूसरी ओर अमेरिका ने सीरियन डेमोक्रेटिक फोर्स के हजारों लड़ाकूओ को तालीम दी थी । शस्त्रों और अबजो डॉलर्स की नाणकीय सहाय की थी । यूएन के एहवाल मुताबिक सिविल वॉर दौरान कम से कम ३.५० लाख लोगों की मृत्यु हुई थी । हजारों बेगुनाह नागरिकों को बिना किसी कानूनी प्रक्रिया के बिना ही जेलो और डिटेंसन सेंटर मे धकेला गया था । उधर ही यह सब नागरिकों को बहुत ही बर्बरता पूर्वक मौत के घाट उतारा गया था । सीरिया में हुए इस नर संहार ने पूरे विश्व में हाहाकार मचा दिया था । २२ देश की बनी अरब लिग के ईस संगठन में से सीरिया की हकालपट्टी कर दी थी । लेकिन पूरी दुनिया के विरोध के बाद भी असद को कुछ नहीं हुआ । सामान्यतः ऐसी

घटनाओं में शासनकर्ता के सामने इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट में कार्यवाही हो सकती है । लेकिन यहां ऐसा ना हो सका क्योंकि सीरिया इस कानूनी समझौते का सदस्य नहीं था । इसलिए उस पर न्यायालय में मुकदमा नहीं चला सकते । लेकिन अगर यूएन की सिक्योरिटी काउंसिल प्रस्ताव रखे तो सदस्य ना होने पर भी ऐसे देश पर कार्यवाही हो सकती है । सुरक्षा समिति ने प्रस्ताव रखने का प्रयास भी किया था लेकिन रशिया और चीन ने इस प्रस्ताव के विरुद्ध वोट दिया था, इसलिए असाद बच गया था । लेकिन कुदरत का नियम है ना कि पाप छत पर चढ़कर पुकारता है । असद के जुल्मों का पर्दाफाश हो गया था । जर्मनी के केबलनेझ नाम के शहर की अदालत में जिसे सजा सुनाई थी वह अनवर रासलन दमास्क के पास आया हुआ ब्रांच २५१ नाम से जाने जाते क्रुरता के लिए कुख्यात डिटेंशन सेंटर का प्रमुख अफसर था । उसके कार्यकाल के समय दौरान उनकी ही निगरानी में हजारों लोगों को मौत की आगोश में सुलाया गया था । इस दौरान कुछ ऐसा हुआ कि २०१२ में अनवर अपने परिवार के साथ जॉर्डन भाग निकला था, बाद में २०१४ में राजकीय शरण लेकर जर्मनी में रहने लगा था । इस दौरान जर्मनी में शरण लेकर रहने वाले हजारों सीरियन नागरिको ने अनवर को पहचान लिया था । २०१९ में अनवर की गिरफ्तारी करके उनके सामने मुकदमा शुरू हुआ था । न्यायालय ने उसे २७ लोगों की हत्या और

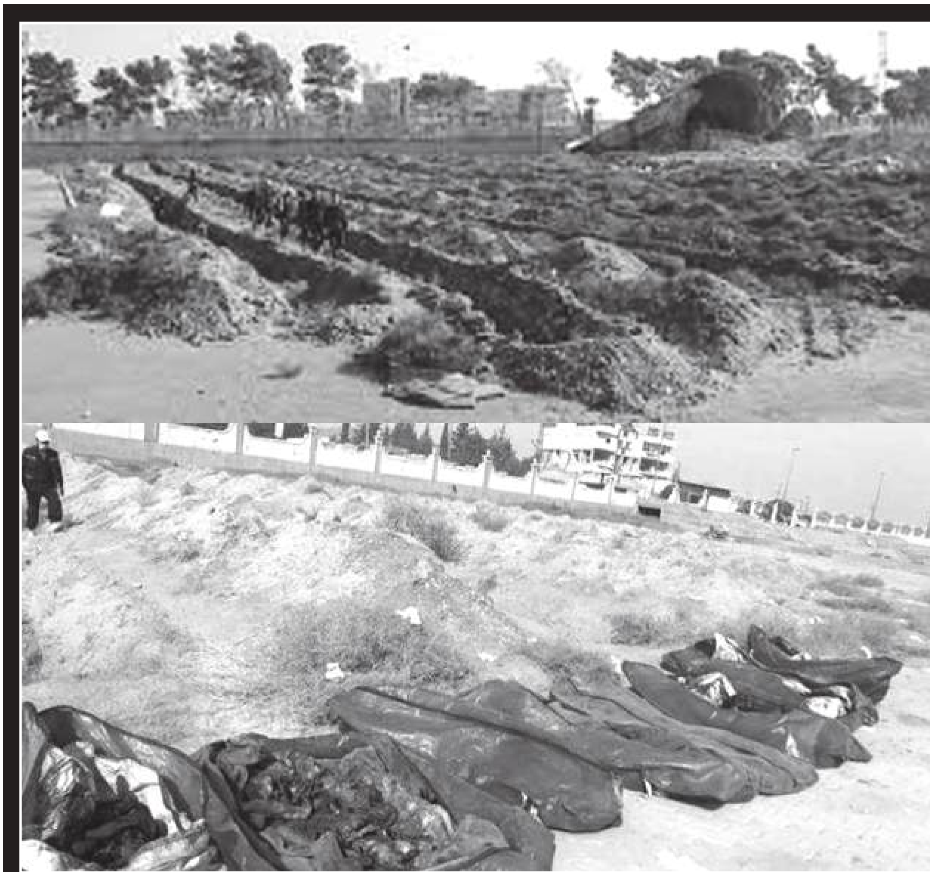

हजारो लोगों को सामूहिक तौर पर फांसी पर लटकाया गया था । हर एक लाश जब जिंदा इंसान थे तब उसके पर हुए पाशविक हुए अत्याचार की गवाई दे रही थी । अनगिनत लोगों के हाथ पैरों के नाखून जिंदा ही खींच लिए गए थे ।

४००० लोगों पर पाशविक और जातिय अत्याचार के दो केस में दोषी करार देकर आजीवन कैद की सजा सुनाई थी । यह प्रथम घटना है जिसमें सीरिया के कोई पूर्व सेना अफसर के सामने गुन्हा साबित हुआ हो और सजा सुनाई गई हो । सीरिया के ही दूसरे एक डॉक्टर आला मूसा को जेल में डाला गया था । उनके सामने कैदीओ के गुप्त अंगो सुलगाने का आरोप था ।

अनवर रासलन के मुकदमे में पहली बार दस्तावेजी सबूतो और ५०००० फोटोग्राफ्स पेश किए गए थे । यह सब दस्तावेजो कैसे मिले उसको जानना भी रोमांचक है । सिविल वॉर दौरान पुलिस और सेना जब अत्याचार गुजार रहे थे तब मानव अधिकार के लिए कुछ कार्यकर्ताओं ने अपनी जान की परवाह किए बिना हजारों दस्तावेजों की तस्करी करके उसे विदेश में चोरी छुपी से भेज दिए थे । बाद में यह कार्यकर्ताओं 'डॉक्यूमेंट हैंटर' के नाम से प्रचलित हुए । दूसरी ओर यह शैतानी कार्यों के लिए कुछ अफसरों नाराज थे । उसमें से एक अफसर ने जेलों, डिटेंशन सेंटर और सामूहिक दफन

२०१९ में अनवर की गिरफ्तारी करके उनके सामने मुकदमा शुरू हुआ था । न्यायालय ने उसे २७ लोगों की हत्या और ४००० लोगों पर पाशविक और जातिय अत्याचार के दो केस में दोषी करार देकर आजीवन कैद की सजा सुनाई थी । यह प्रथम घटना है जिसमें सीरिया के कोई पूर्व सेना अफसर के सामने गुन्हा साबित हुआ हो और सजा सुनाई गई हो ।

स्थलों के ५०,००० से भी ज्यादा फोटोग्राफ्स निकाल लिए थे । उस अफसर की अभी तक पहचान नहीं हुई है । सुनवाई के दौरान उसको 'सीजर' नाम दिया गया था और उसका चेहरा छुपाया गया था । दूसरी ओर अनवर के अत्याचार से पीड़ित १०० लोगों ने अनवर के विरुद्ध जुबानी दी थी । एक महिला ने बताया कि उसको निर्वस्त्र करके किस तरह से पुछपरछ की गई थी । उस महिला को भी न्यायालय में मुकद्दमे में के सुनवाई के दौरान चेहरे से छुपाया गया था । उसको Z नाम दिया गया था । जे ते समय पर दमासक्स में कुदरती रूप से मौत होने वाले लोगों को दफन करने के सरकारी विभाग का कर्मचारी था, उस दौरान एक दिन दो इंटेलिजेंस अफसर उसके पास आए थे और मृतदेहो के लिए रखें रेफ्रिजरेटेड ट्रक का ड्राइविंग करने की जिम्मेदारी उसको सौंपी गई थी । उसके बाद कई महीनो तक इस आदमी ने अलग-अलग जेलो और डिटेंशन सेंटरो में से मुर्दे को रण में सरकार ने बनाए हुए दफन स्थलों पर पहुंचाता रहा । उसने बताया कि कभी-कभी दिन में ऐसे एक से ज्यादा फेरे करने में आता था । जैसे लाश कम होने का नाम ही नहीं लेती । ३५ फीट लंबे रेफ्रिजरेटर ट्रक में कम से कम २०० और ज्यादा से ज्यादा ७०० लाशें को रखी जाती थी । अनेक लाशें लंबे समय से

वहां पड़ी रहने से सड़ गई थी । उस में से बदबू आ रही थी । लाशों में कीड़े पड़ गए थे । हजारो लोगों को सामूहिक तौर पर फांसी पर लटकाया गया था । हर एक लाश जब जिंदा इंसान थे तब उसके पर हुए पाशविक हुए अत्याचार की गवाई दे रही थी । अनगिनत लोगों के हाथ पैरों के नाखून जिंदा ही खींच लिए गए थे । पहचान ना हो इसलिए लोगों के चेहरों जलद एसिड से विकृत बनाया गया था । गवाही देते समय वो गवाह बार बार रोने लगता था । वो अंदर से एकदम टूट गया था । उसने आगे बताया कि मिलिट्री के वाहनो लाशें भरे हुए ट्रक को एस्कॉर्ट करके दफन के स्थल तक ले जाते थे । वहां १६० फीट लंबे ३०० फीट चौड़े और ६ फुट गहेरे खड़े में फेंक दिया जाता था । मृतदेह का मान भी नहीं रखा जाता था । जैसे सब पशुओं की लाश है । वह गवाह ने रोते हुए अदालत को कहा कि यह खौफनाक था, ये सब बातें और दृश्यों मुझे चैन से जीने नहीं देगी । ऐसे कमनसीब मृतदेहो के लिए अंतिम प्रार्थना करने वाला भी कोई नहीं था । यह सब मृतदेह कभी किसी के भाई, बेटा और पिता रहे होंगे । लेकिन उसके अंतीम समय में उसके पीछे रोने वाला कोई वहां मौजूद नहीं था । सीरिया में हुए अत्याचार की यह सिर्फ झांकी है, लेकिन इस मुकदमे से सच बाहर आ गया है । गुनहगारों को सजा मिलनी शुरू हो गई है । सिविल वॉर में जिसके पांच भाई लापता थे उस यास्मीना अलमशान नाम की महिला ने कहा कि आखिरकार न्याय मिल रहा है ।

इतने सारे गुनाहों के बाद भी रशिया के आशीर्वाद से असाद अभी भी सलामत है । अरब लीग में सीरिया के पुन: समावेश की प्रक्रिया भी शुरू हो गई है । दूसरी और असद शासन के अत्याचार जानने के बाद भी जर्मनी में से सीरियन शरणार्थी को वापस भेजने के लिए सरकार के सामने विरोध शुरू हो गया है । यूरोपीय देशों और अमेरिका के साथ संबंधो को सामान्य बनाने में असाद के प्रयासों को अवश्य ही झटका लगेगा ऐसा माना जाता है ।

इतने सारे गुनाहों के बाद भी रशिया के आशीर्वाद से असाद अभी भी सलामत है । अरब लीग में सीरिया के पुन: समावेश की प्रक्रिया भी शुरू हो गई है । दूसरी और असद शासन के अत्याचार जानने के बाद भी जर्मनी में से सीरियन शरणार्थी को वापस भेजने के लिए सरकार के सामने विरोध शुरू हो गया है । यूरोपीय देशों और अमेरिका के साथ संबंधो को सामान्य बनाने में असाद के प्रयासों को अवश्य ही झटका लगेगा ऐसा माना जाता है ।

विराट प्रतिभाशाली फील्ड मार्शल

कोडंडेरा मडप्पा करिअप्पा

आज के युग में हमारे देश या समाज में जिसको हम हमारे देश का भविष्य कहते हैं ऐसे किशोर या युवाओं को फिल्मी सितारों, अलग-अलग खेल के खिलाड़ी या काल्पनिक कॉमिक बुक के काल्पनिक हीरो का क्रेज रहता है। बड़े होकर वह अपने ऐसे चहीते हीरो की तरह बनने चाहते है। कोई कोहली, तो कोई कपिल देव बनना चाहता है। कोई सलमान खान तो कोई अक्षय कुमार बनना चाहता है। कोई सुपरमैन तो कोई स्पाइडर-मैन जैसा बनना चाहता है। उसमें यह बच्चों की कोई गलती भी नहीं क्योंकि वह जिसको देखते हैं या जीसके बारे में उसको ज्यादा सुनाया जाता है, वैसे बनना

अनसंग हिरो

◆ यज्ञेश ठक्कर-बरोडा ◆

चाहते हैं। ऐसी देखी या सुनी बातों से उनके दिमाग में ऐसे लोगों की एक तस्वीर कैद हो जाती है, अगर माता-पिता अपने बच्चों को अपने आजादी के लड़वैया, स्वतंत्रता सेनानियों, हमारे सेना के वीर जवानों या अफसरों, हमारे देश को विधर्मियों से बचाने के लिए पूरे जीवनकाल में संघर्ष करते रहे और अपनी जान न्योछावर करने वाले हमारे हिंदू राजाओं के बारे में बताते या उसकी वीर गाथाएं सुनाते, तो बच्चे ऐसे बनने का ख्वाब देखते हैं। लेकिन ऐसा होता नहीं है और ज्यादातर माता-पिता अपने परिवार के पालन पोषण के लिए जरूरी पैसा कमाने में लगे रहते हैं या अपने-अपने दोस्तों के साथ ज्यादा समय गुजारते हैं और इसी तरह बच्चे भी अपना समय टीवी या वीडियो गेम के सामने बैठ के बिताते हैं, ऐसे में कहां अपने देश के रियल हीरो के बारे में सोचने का समय होता है ?

हमारे देश को स्वतंत्रता दिलाने में हजारों

लाखों लोगों ने कुर्बानियां दी है। हमारे दुर्भाग्य यह है कि देश के कर्मवीर सपूतों के नाम काम की याद का हमारे देश में बहुत ही अभाव है। इसका कारण भी तार्किक है, हमारे देश की स्वतंत्रता के लिए जीसने अपनी पूरी जिंदगी निकाल दी ऐसे महात्मा गांधी,सुभाष बाबू, खुदीराम बोस,बटुकेश्वर दत्त,जतिन दास,भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद जैसे सरफरोशों के बारे में हम अपने बचपन से लेकर कॉलेज तक पढ़कर बड़े हुए हैं।

दूसरी ओर १९४७ से लेकर आज दिन तक हमारे देश की स्वतंत्रता बरकरार रखने के लिए लहू पसीना बहा देने वाले कितने जवानों के नाम काम हमारे पढ़ने में आया या हमें स्कूलों में पढ़ाया गया ? देश के वीरो, महावीरो और परमवीरों के प्रति अज्ञान या अवहेलना का ही नतीजा है कि दिसंबर २०२३ में भारतीय खुश्की दल के महान सेनापति फिल्ड - मार्शल, साम बहादुर मानेक शो पर से बनी हुई फिल्म 'सेम बहादुर' जब सिनेमाघर में रिलीज हुई तब ज्यादातर लोगों के मन में सवाल पैदा हुआ कि 'साम बहादुर' कौन है? लेकिन अच्छा हुआ कि यह फिल्म देखने के बाद लोगों को उनके सवाल का जवाब मिल गया और हमारे सेना के जांबाज फील्ड - मार्शल सेम बहादुर के पराक्रमों से अवगत हो गए। वैसे देखा जाए तो हमारे स्कूलों के पढ़ने की किताबें जो काम ना कर सकी वह इस बॉलीवुड की यह फिल्म ने कर दिखाया। ऐसा ही एक नाम है जो हमें स्कूलों में पढ़ने में नहीं आया अगर स्कूलों में उनके बारे में बताया जाए तो बहुत ही प्रशंसनीय रहेगा या उनके पर बॉलीवुड में एक फिल्म बनाया जाए ऐसा एक नाम है हमारे सेना के प्रतिभाशाली फील्ड मार्शल कोडंडेरा मडप्पा करिअप्पा।

दूसरी ओर १९४७ से लेकर आज दिन तक हमारे देश की स्वतंत्रता बरकरार रखने के लिए लहू पसीना बहा देने वाले कितने जवानों के नाम काम हमारे पढ़ने में आया या हमें स्कूलों में पढ़ाया गया ?

जिसका अज्ञातवास अभी तक पूरा नहीं हुआ है। आज हम यहां पर इस महा पराक्रमी फील्ड मार्शल के बारे में आपको विस्तृत रूप से जानकारी देंगे क्योंकि अभी २८, जनवरी २०२३ में उसका १३५ वा जन्मदिन था।

जनवरी २८, १८८९ कर्नाटक के कुर्ग जिले में मंडीकेरी गांव में कोडंडेरा का जन्म हुआ। हमारे सेना के कई बहादुर जांबाजों इस दुर्ग जिले से मिले हैं। यहां की कोडावा जाति की प्रजा दक्षिण भारतीय होने के बावजूद भी द्रविड नहीं है। लेकिन कहते हैं कि वह मूल रूप से आर्यन प्रजा से आते हैं। कोडावा जाति की एक खास बात है कि उन लोगों का शारीरिक कद उंचा होता है और वह गौर वर्ण के होते हैं। बिल्ली जैसी थोड़ी रताश वाली भूरी आंखों की वजह से अंग्रेजी में उनको 'पुसी केट पीपल' नाम से जाने जाते हैं। कोडावा जाति की तीसरी खासियत यह है कि इस लोगों के घर में तलवार से लेकर पिस्टल जैसे शस्त्र रहे होते हैं, उसको लेने के लिए उन लोगों को परवाने की जरूरत नहीं रहती क्योंकि कोडावा की गिनती योद्धा वंश में होने से शस्त्र रखना और उसकी पूजा करने की परंपरा उनके परिवारों में सदियों से चली आती है।

योद्धा वंशी कोडावा कुल में जन्मे कोडंडेरा मडप्पा करिअप्पा के लहू के कण कण में शौर्य के गुण मिल गए थे। उसमें अपने साहस - शौर्य का परिचय सिर्फ १८ साल की आयु में दे दिया था। हुआ ऐसा की मंडिकेरी में शिक्षा पूरी करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए कोडंडेरा (परिवार ने उसको 'चिम्मा' का प्यारा नाम दिया था) मद्रास प्रेसीडेंसी कॉलेज में गए थे वहां उसको मालूम पड़ा की ब्रिटिश हिंद की सरकार ने उसके दल में भारतीय अफसर को शामिल करने का शुरू किया था। युवां चिम्मा ने ये मौका पा लिया और उसमें सेना में शामिल होने की कसौटी दे कर उसमें अच्छे गुणों से उत्तीर्ण भी हो गए और २ साल की सेना के प्रशिक्षण

के लिए इंदौर की प्रतिष्ठित दिल्ली कैडेट कॉलेज में दाखिल हुए।

१, दिसंबर १९१९ के दिन तालीम पूर्ण करके चिम्मा की ब्रिटिश हिंद की फौजी कारकिर्दी की शुरुआत हो गई। ब्रिटिश हुकूमत के नीचे उसने ईरान, इराक, सीरिया, म्यांमार जेसे युद्ध मोर्चे मे अपने शौर्य का परचा दिखाया। जिसके कारण वो 'ऑर्डर ऑफ एंम्पायर', 'मेंशन इन डिस्पेचिस', 'बर्मा स्टार', 'वॉर मेडल', जैसे खिताबों से नवाजे गए। समय-समय पर सेकंड लेफ्टिनेंट, लेफ्टिनेंट, कैप्टन, मेजर, लेफ्टिनेंट कर्नल, कर्नल, ब्रिगेडियर जैसे पदों पर क्रमशः पदोन्नत हुए।

देश अभी गुलाम था और सेना में अपने से ऊपर के पद पर सीनियर अफसर अंग्रेज होने की वजह से सहज रूप से जूनियर भारतीय अफसर को झुके हुए मस्तक से गोरे की आमन्या रखनी पड़ती थी। ब्रिटिश साम्राज्य विरुद्ध कुछ भी बोलने से पहले सो बार सोचना पड़ता था। लेकिन के. एम. करियप्पा अलग मिट्टी से बने हुए फौजी थे। जब नीतिमत्ता का गला घोंटा जाता हो और अपनी फर्ज अदाकारी में बाधाएं आती है तब अपने सीनियर अफसर की बातों को नहीं मानने की हिम्मत वो रखते थे। यह बात को समझने के लिए यहां पर दो उदाहरण दिए हैं वह बहुत है।

गोरी हुकूमत के सामने सिर्फ सूत्रोच्चार ही नहीं बल्कि शस्त्रों उठाने वाले नेताजी सुभाष चंद्र बोस की इंडियन नेशनल आर्मी (आईएनए) को अंग्रेजों ने ध्यान में रखा था। आजादी की लड़ाई में सक्रिय रहेनार आईएनए के अनगिनत सैनिको को ब्रिटिश हिंद सरकार ने बंदी बनाकर कैद कर लिया था। कोई वजह से ऐसी एक छावनी में के. एम. करिअप्पा को जाने का हुआ। के. एम. करिअप्पा ब्रिटिश हिंद सेवा के अफसर होने से आईएनए के बंदीवान सैनिको उनके दुश्मन बनते थे, इसलिए तिरस्कार सी नजरों

से उन सबको देखें तो उसमें लश्करी नीतिमता का खंडन नहीं होता था। लेकिन हमने आगे लिखा ऐसे के. एम. करीअप्पा अलग मिट्टी से बने हुए थे। उस छावनी की मुलाकात के दौरान उसने देखा कि इंचार्ज अंग्रेज अफसरने आईएनए के भारतीय सैनिकों को बिस्मार हालत में रखा था। पानी और खाने की पूरी सुविधाएं भी नहीं थी। यहां पर नीतिमत्ता के अलावा मानवता का भी गला घोंटा गया था इसलिए करिअप्पा ने अपने सीनियर अफसर को खत लिखा और आईएनए के बंधक सैनिकों को योग्य सुविधा उपलब्ध कराने के लिए दबाव पूर्वक कहां और जब तक ऐसा नहीं हुआ तब तक वो चेन से बैठे नहीं थे।

फरजपरिस्ते बीच में विघ्न रूप से आने वाले गेरव्याजबी कमांड को ना मानने की के. एम. करिअप्पा की प्रकृति का परिचय

भारतीय सेवा में शिस्त, संयम और सदभावना जैसे उच्च दृष्टांत देते हुए जनरल करिअप्पा को १५, जनवरी १९८६ में राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के हाथों से फील्ड मार्शल का खिताब देकर पदोन्नित किया गया।

१९४७ के प्रथम भारत पाकिस्तान युद्ध के समय में बनी हुई एक घटना से मिलता है। २२, अक्टूबर १९४७ में के दिन मेजर जनरल अकबर खान की अगबाई में पाकिस्तानी सेना और अफरीदी, पठान, पुश्तुन, बलोच जैसे जाति के घुसपैठियोंने कश्मीर पर बड़ा हमला किया था। दुश्मन के इस हमले को कश्मीर में तैनात भारतीय लश्कर का कमान और कंट्रोल (अब लेफ्टिनेंट जनरल के पद पर रहे) के. एम. करिअप्पा के हाथ में था लेकिन दुर्भाग्य रूप से करीअप्पा का रिमोट कंट्रोल उनके उपरी जनरल फ्रांसिस रोय बूचर नाम के अंग्रेज के हाथ में था। कश्मीर में हमारी सेना कैसे और कब लड़ना है उसके आर्डर वह दिया करता था यह भी एक ट्रेजेडी थी कि हमारे देश का सैन्य एक गोरे अफसर के इशारे पर चल रहा था।

उत्तर पश्चिम मोर्चे के सेनापति होने की वजह से लेफ्टिनेंट जनरल करिअप्पा ने दुश्मनों को वहां खदेड ने के लिए एक रणनीतिक योजना जनरल बूचर के सामने रखी। लेकिन बूचर ने उसको ना मंजूर कर दिया। लश्करी शिस्त से बंधे हुए करिअप्पा ने बार-बार बिनती की लेकिन उसका कुछ असर उस पर नहीं हुआ। लेकिन बाद में करिअप्पा का फौजी दिमाग सटक गया और फर्ज पालन और राष्ट्र के हित में बीच में बाधा बनने वाले जनरल बूचर का ऑर्डर ना मानते हुए उसके विरुद्ध जाकर कश्मीर के राजौरी, पुंच, नौसेरा, अखनूर, पुरी

जैसे विस्तारों में बहुत बडा लश्करी अभियान चालू किया। श्रीनगर को लद्दाख के साथ जुड़ते हुए एकमात्र पहाड़ी धार झोजिला (ऊंचाई ११,५०० फीट) दुश्मनों के हाथ में जाने से बचाने के लिए करिअप्पा ने जो रणनीति बनाई वह अद्भुत थी। भारत के इतिहास में सोने के शब्दों में लिखने लायक वो साहस मतलब ११,५०० फीट की ऊंचाई पर स्टुअर्ट टाइप की १४,५०० किलो वजन की टैंक को पहुंचाना, वह भी एक नहीं बल्कि पूरी १०।

मर्यादित शस्त्र सरंजाम के तत्कालीन युग में टैंक को इतनी ऊंचाई पर ले जाना ना मुमकिन तरीके से मुश्किल था। लेकिन लेफ्टिनेंट जनरल करिअप्पा के जाबांजों ने वह करके दिखाया और सिर्फ दुश्मन ही नहीं पूरे विश्व को अचंबित कर दिया। किसी ने सोचा नहीं ऐसा हो गया। भारतीय जवानों और हमारी स्टुअर्ट टैंक ने पाकिस्तान को ऐसा फायरब्राण्ड जवाब दिया कि झोजीला जैसे सुई की नॉक की तरह बच गया। ऐसा भी कहना चाहिए की लेफ्टानेंट जनरल करिअप्पा की जुए के दाव जैसी रणनीति की वजह से हमारा पूरा लद्दाख पाकिस्तान के हाथों में जाने से बच गया।

करिअप्पा के महान व्यक्तित्व का अंदाज इस घटना से आता है। १५, जनवरी १९४९ में के दिन वह अपने सैन्य के सी- इन - सी /कमांडर इन चीफ बने। पहले इस पद पर अंग्रेज जनरल रोय बूचर थे। स्वतंत्रता के बाद किसी भारतीय अफसर ने पहली बार यह सी-इन-सी का अग्रिम क्रम का पद संभाला था। इसलिए १५ जनवरी को आर्मी डे जारी किया गया है। यह पद पर आने से अब जनरल करिअप्पा सिर्फ खुश्की दल के सेनापति ही नहीं, भारतीयसेना के तीनों पांखो के कमांडर बन गए थे। एक दिन उनको संरक्षण मंत्रालय में होने वाली मीटिंग में हाजिर रहने को कहा गया । नेवी और एयरफोर्स के अफसर भी इस मीटिंग में शामिल होने वाले थे। लेकिन जब जनरल

दुश्मन के हमले को कश्मीर में तैनात भारतीय लश्कर का कमान और कंट्रोल के. एम. करिअप्पा के हाथ में था लेकिन दुर्भाग्य रूप से करीअप्पा का रिमोट कंट्रोल उनके उपरी जनरल फ्रांसिस रोय बूचर नाम के अंग्रेज के हाथ में था।

करिअप्पा को मालूम पड़ा की मीटिंग में अध्यक्ष पद पर संरक्षण मंत्रालय के सचिव रहने वाले थे, तब वो आग बबुले हो गए। मंत्री नहीं लेकिन सचिव कक्षा के सरकारी अफसर भारत के सी-इन-सी के सामने अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठे वह किस तरह से सहन किया जाता है? यह तो देश के सी-एन- सी पद पर कलंक लगने जैसी बात थी, जो लश्करी शिस्त के कड़े आग्रही जनरल करिअप्पा को ना मंजूर था। इसलिए वह इस मीटिंग में गए ही नहीं और तय किया कि बदले में सरकार की ओर से जो भी कार्यवाही हो मंजूर है लेकिन सी-इन-सी के पद पर कोई दाग नहीं लगने देंगे।

उसके निजी जीवन में भी वो कभी अपने खुमारी भरे सिद्धांतों में बांधछोड नहीं करते। ऐसी एक घटना को भी यहां दर्शाना जरूरी है। यह घटना १९६५ में भारत-पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध के दौरान की है। के.सी.नंदा करिअप्पा, जनरल के युवा बेटे भारतीय वायुसेना में फ्लाइट लेफ्टिनेंट थे और वह गगन में दुश्मन के साथ युद्ध लड़ने गए थे। लेकिन उसके हैंटर विमान को पाकिस्तान सेनाने मार गिराया और के.सी. नंदा को युद्ध कैदी के तौर पर बंदी बनाया गया था। जब पाकिस्तान सरमुखत्यार जनरल अयूब खान को यह संदेश मिला तो उसने जनरल करिअप्पा को फोन करके कहा कि, ''आप कहो तो आपके बेटे को हम छोड़ दे।'' लेकिन यह तो जनरल करिअप्पा थे। उसने कहा कि, ''अब वह मेरा बेटा नहीं है, भारत मां का बेटा है और मां की हिफाजत के लिए लड़ने के लिए दूसरे हजारों बेटे की तरह ही है। इसलिए उसको कोई भी खास प्रकार की सुविधाए ना देकर दूसरे युद्ध कैदी जैसा ही व्यवहार करें।''

बीते बरसों में अयूब खानने ब्रिटिश हिंद की सेवा में करिअप्पा के जूनियर के तौर पर काम किया था। इसलिए अगर एक समय के सीनियर अफसर ने अपने जूनियर अफसर अयूब खान को अपने बेटे को छोड़ने का आदेश दिया होता तो वह तुर्त आदेश मान लेते लेकिन करिअप्पा ने निजी जीवन या रिश्तो से ऊपर अपने लश्करी शिस्त को रखा है। यह सब जानने के बाद जनरल करिअप्पा के प्रति हमारा मान और आदर बढ़ जाता है।

भारतीय सेवा में शिस्त, संयम और सदभावना जैसे उच्च दृष्टांत देते हुए जनरल कोडंडेरा मडप्पा करिअप्पा ने १९५३ के साल में सेवा निवृत्ति ली। बादमें जनरल करिअप्पा को १५, जनवरी १९८६ में राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के हाथों से फील्ड मार्शल का खिताब देकर पदोन्नित किया गया। निवृत्ति के बाद भी उन्होंने सेना के लिए कई तरीके से सम्मानित कार्य कीया है। १९९१ में करिअप्पा का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा था। वह गठिया और हृदय की समस्याओं से पीड़ित थे। १५, मई १९९३ में बेंगलुरु कमांड अस्पताल में नींद में ही उनकी मृत्यु हो गई।

अगर स्कूलों के अभ्यास क्रमो में उनके पराक्रम गाथाओं को शामिल किया जाए और सेम बहादुर की तरह फिल्मी पर्दे पर जनरल के.एम.करिअप्पा के किरदार को दर्शाया जाए तो हमारे देश के बच्चों और प्रजा के सामने उनकी पराक्रम गाथाए आएगी, तो लोगों को भी यह सब जानकर अपने इस प्रतिभाशाली जनरल के लिए आदर पैदा होगा।

जय हिन्द।

मुंबई नाईट लाइफ की जान डांस बार की अंदर की बातें

हमारे देश की आर्थिक राजधानी मुंबई,यानि की माया नगरी। मुंबई मतलब सपनों का शहर। कहा जाता है कि ये शहर कभी थमता नहीं है। कहा जाता हैं कि हमारे देश में जब रात होती है तब मुंबई शहर में दिन शुरू होता है क्योंकि यहां की राते रंगीन होती है। रात होते ही डांस बार,नाइट क्लब,मुजरा चालू हो जाता है। कहते हैं की एक रात में जीतने काले धंधे मुंबई में होते हैं इतने कहीं और शहर में नहीं होते।

देश के चारों ओर से अलग-अलग राज्यों से लोग यहां अपने सपनों को साकार करने के लिए आते हैं। एक बात तो सही है कि मुंबई शहर में बाहर से आने वाले हर इंसान को यह शहर अपनी आगोश में समा लेता है। यहां मेहनतकश इंसान को कभी भूखा नहीं रहना पड़ता। यहां बाहर से आए सब लोग अपने-अपने काम में व्यस्त रहते हैं। मुंबई में एक और चमकता दमकता व्यापार है, बॉलीवुड। यहां के अपने चहीते फिल्मी सितारों को देखने के लिए लोग अलग-अलग राज्यों से यहां पर आते हैं और किसी को जब ऐसे फिल्मी सितारों का दीदार हो जाता है तो वह अपने आपको बहुत ही खुशनसीब समझता है।

लेकिन मुंबई की सबसे खास बात है यहां की रंगीन नाईट, जहां की रोशनी आंखों को चक्काचौंध कर देती है। बाहर के राज्यों से पहली बार मुंबई आये लोगों को तो यह जन्नत समान और अचम्बित कर देने वाला लगता है। यहां की लाइफ लाइन है लोकल ट्रेनो जो २४ में से करीबन २२ घंटे लगातार चलती रहती है, और लाखों मुंबईकर को अपने काम या धंधे व्यापार की जगह पर समय पर पहुंचाती है। अगर थोड़े समय के लिए यह लोकल ट्रेन की सेवा कोई कारण से बंद रहे तो यहां के लोगों को बहुत ही कठिनाई का सामना करना पड़ता है। सबका टाइम टेबल बिखर जाता है। जैसे कि पूरा मुंबई शहर थम जाता है।

मुंबई शहर के बारे में और भी बहुत कुछ जानने लायक है लेकिन आज हम यहां पर बात करेंगे यहां के डांस बार की जो मुंबई की नाइट लाइफ की जान कहलाती है। मगर ऐसी जगह पर काम करने वालों की लाइफ एकदम

से लाचार और मजबूरी से भरी होती है।

डांस बार एक शब्द है जिसका उपयोग भारत में उन बातों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जीन में नकदी के बदले में पुरुष संरक्षण के लिए अपेक्षाकृत अच्छी तरह से कपडे से ढकी हुई महिलाएं द्वारा नृत्य के रूप में वयस्क मनोरंजन किया जाता है। डांस बार केवल महाराष्ट्र में मौजूद थे लेकिन बाद में पूरे देश में फैल गए मुख्यतः शहरों में। डांस बार बांछित होने की भावना की आवश्यकता को पूरा करने वाली कल्पना की एक चुलबुली दुनिया है।

पहला डांस बार १९८० के दशक की शुरुआत में महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में खालापुर में शुरू हुआ था। पुणे शहर का पहला डांस बार होटल कपिला इंटरनेशनल था। मुंबई में सबसे पहले बेवॉच डांस बार शुरू हुआ था। अगस्त २००५ में महाराष्ट्र राज्य में डांस बार पर प्रतिबंध लगा दिया था। जिससे पहली बार १२ ,अप्रैल २००६ को मुंबई हाई कोर्ट ने रद्द किया था और जुलाई २०१३ में सुप्रीम कोर्ट ने फैसले को बरकरार रखा था। २०१४ में एक अध्यादेश द्वारा डांस बार पर फिर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन अक्टूबर २०१५ में सुप्रीम कोर्ट ने इसे भी 'असंवैधानिक' पाया जिससे मुंबई डांस बार को फिर से खोलने की अनुमति मिल गई, लेकिन कुछ शर्तो के पालन के साथ। जब २००५ में महाराष्ट्र सरकार ने डांस पर प्रतिबंध लगाया था तब करीबन डेढ़ लाख लोग बेरोजगार हो गए थे जीन में ७०,००० लड़कियां थी।

सुप्रीम कोर्ट ने जीन शर्तो के साथ डांस बार शुरू करने का आदेश दिया था जैसे की, सीसीटीवी के जरिए डांस बार की लाइव स्ट्रीमिंग नजदीकी पुलिस थाने में की जाएगी, इसके अलावा डांस बार में सिर्फ चार लड़कियां ही बार गर्ल के तौर पर काम कर सकेगी, डांस बार में काम करने वाली लड़कियों की उम्र १८ साल से कम नहीं होनी चाहिए, डांस बार में ग्राहकों और लड़कियो के बीच २ मीटर की दूरी होनी चाहिए।

पहला डांस बार १९८० के दशक की शुरुआत में महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में खालापुर में शुरू हुआ था। पुणे शहर का पहला डांस बार होटल कपिला इंटरनेशनल था। मुंबई में सबसे पहले बेवॉच डांस बार शुरू हुआ था।

कड़े नियमो बनाने के बाद भी राज्य ओर खास तौर पे मुंबई में कई डांस बार बिना परवाने ही चल रहे हैं। अगर परवाना लिया है तो वह सिर्फ दिखाने के लिए रखा गया है और डांस बार के अंदर तो पहले जैसी ही गड़बड़ियां चलती है। यहां अभी भी नाबालिक लड़कियों को काम पर रखा जाता है। उसके इलावा नियम से अधिक संख्या में लड़कियों को रखना, डांस फ्लोर पे स्टेज नहीं बनाना, लड़कियों और ग्राहको के बीच २ मीटर की दूरी रखना, ग्राहकों द्वारा लड़कियों पर पैसा उड़ाना और उनके साथ डांस करना साथ साथ लड़कियों के बदन को छूना जैसी प्रवृत्तियां बीना रोकटोक डांस बार में चलती रहती है क्यूंकि डांस बार के मालिको द्वारा सरकारी बाबुओं को मिलती है हफ्ता वसूली। पुलिस डिपार्टमेंट और सरकारी बाबुओं के डिपार्टमेंट ऐसी हफ्ता वसूली में लगे रहते हैं।

सरकार के यह नए कड़े कानून से सरकार या तो आम जनता को फायदा हुआ कि नहीं यह तो मालूम नहीं है लेकिन इस लाइन से जुड़े हुए सरकारी डिपार्टमेंट में कई ऐसे भ्रष्ट अफसर है जिसकी आमदनी का ग्राफ बहुत ही तेजी से ऊपर चला गया है। यह नए कानून से हमें भी लगा था कि अब सब का भला होगा। और खास करके ऐसे बार में काम करने वाली लड़कियों का, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ आज भी यहां काम करने वाली लड़कियों की स्थिति बेहद लाचार और दयनीय है।

डांस बार में काम करने वाली ज्यादातर लड़कियां यूपी,असम,कोलकाता,राजस्थान, बंगाल जैसे राज्यों से आती है। यह लाइन में आने के बहुत कारण है लेकिन ज्यादातर,छोटी उम्र में घर से भाग जाना,ना समझ मैं प्रेमी के साथ भाग जाना, गरीबी और मजबूरी जैसे कारण होते हैं। कई किस्सो मे जबरदस्ती लड़कियों को इस लाइन में लाई जाती है। ऐसा भी मालूम पड़ा है की लड़कियां क्लासिकल या वेस्टर्न डांस में माहिर होती हैं

और सोचती है कि अपने ईस हुनर के द्धारा मे पैसा कमाऊंगी और अपने परिवार का जीवन निर्वाह करूंगी, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है वह बर्बादी की ओर चली जाती है, जहां से वह वापस मुड़ना चाहे तो भी पुरानी जिंदगी में नहीं जा सकती, इसके लिए यह लाइन अब वन वे बन चुकी होती है जहां से वापस आना नामुमकिन होता है।

हमारी टीम ने अलग-अलग एरिया में रहती कई लड़कियों की जिंदगी में रोशनी डालने की कोशिश की तो उसकी बातें सुनकर हम हैरान से रह गए। ऐसी लड़कियों के बताने अनुसार लड़कियां अपने हुनर और कला से बार में आये ग्राहकों की जेब से पैसा निकलवाती है अपने ढम पर, वह भी हजारों नहीं लाखों की रकम। लेकिन उसके हाथ में बहुत ही कम रकम आती है।और अपने चहीते ग्राहक रोजाना तो नहीं आते। कभी ऐसा भी होता है कि वह एक पैसा भी नहीं कमाती और ऊपर से बार में आने जाने के लिए टैक्सी का किराया भी उसे अपने जब से देना पड़ता है। कभी ऐसे भी दिन आते हैं जब दिनमें दो वक्त खाना भी नसीब नहीं होता। जब वह बीमार होती है तब इलाज के लिए पैसे भी उसके पास नहीं होते, तब उनकी हालत एक लाचार और जानवर से भी बदतर हो जाती है। इन हालातो में कुछ लड़कियां डिप्रेशन में आने से सुसाइड भी कर लेती है, तो कोई लड़की हालात से समझौता करके हमने जिंदा रहने के लिए और अपने परिवार का पालन करने के लिए मजबूरी में लाचार होकर अपने जिस्म का सौदा भी कर लेती है और यहां से शुरू होती है उसके जिस्म के नुमाइश की बेबस और दोजख जैसी जिंदगी।

वैसे भी देखा जाए तो डांस बार में काम करने वाली लड़कियों की जिंदगी चार दिन की चांदनी जैसी होती है। जैसे-जैसे जवानी गुजरने लगती है और उम्र बढ़ने लगती है तब उसको पूछने वाला यहां कोई नहीं होता। ग्लैमर खत्म, काम खत्म। बाद में शुरू होती है बेबस जिंदगी जो बीतते समय के साथ खाक में मील जाती है। डांस बार में काम बंद हो जाने से और कोइ दुसरा रास्ता मिलने पर ऐसी लड़कियों अपने जिस्म फरोशी के धंधे में अपना परिवार का पोषण करने के लिए मजबूरन से चली जाती है। थोडे समय से ओटीटी प्लेटफार्म चालू हुआ है उसमें भी नियमों को ऐसा तैसा करके अश्लील कंटेंट दिखाते हैं और पोर्न फिल्मो का गैरकानूनी धंधा चलाया जाता है। मुंबई में यह काला धंधा तेजी से बढ़ रहा है। उसमें भी ऐसी लाचार और मजबूर लड़कियां चली जाती है क्योंकि उसमें पॉर्न फिल्म के एक रात के शूटिंग के लिए ज्यादा पैसे मिलते हैं। यह ऐसी लाइन है जिसमें बाहर निकालने के लिए लड़कियों जैसे जैसे प्रयास करती है वैसे-वैसे और दलदल में फंसी जाती है।

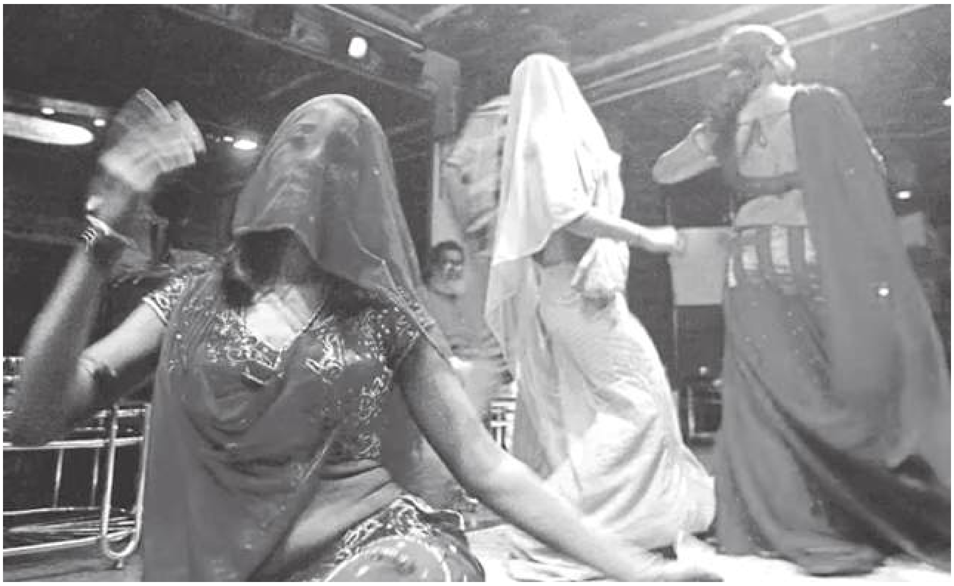

डांस बार में काम करने वाली लड़कियों की जिंदगी चार दिन की चांदनी जैसी होती है। जैसे-जैसे जवानी गुजरने लगती है और उम्र बढ़ने लगती है तब उसको पूछने वाला यहां कोई नहीं होता। ग्लैमर खत्म, काम खत्म।

लेकिन यह लाइन में हमको एक बात का पता चला कि बार में काम करते समय यह लड़की अपने बार मालिकों को पूरी तरह से वफादार रहती है। घर में या तो जिंदगी में कितनी भी कठिनाई क्यों ना हो मगर काम के समय वह सदा ही मुस्कुराती रहती है, लेकिन उसकी हंसी और मुस्कान के पीछे छुपे होते हैं उसके सीसकते हुए आंसू, जो किसी को नजर नहीं आते।

यह सब बातें जानने के बाद ऐसी डांस बार में काम करने वाली लड़कियों की जिंदगी अच्छे से गुजरे और वह जो मेहनत करती है उसके बदले में उसको पूरे पैसे मिले, उम्र ढलने के बाद बेरोजगार हो तब सरकार द्धारा ऐसी कोई योजना द्धारा उसको कोई दूसरे काम में लगाया जाए, उसकी अच्छी आमदनी बनी रहे और समाज में अच्छी तरह से जीने के लिए सुविधाएं मिले उसके लिए हम एक मुहीम छेड़नेवाले वाले हैं। इसके अंतर्गत हम बार मालिकों को भी यह सारी बातों के लिए सहयोग देने को कहेंगे और सरकार को भी यह सारी बातों से अवगत करके इसके बारे में सरकार द्धारा कोई ठोस कदम उठाने के बारे में अपिल करेंगे।

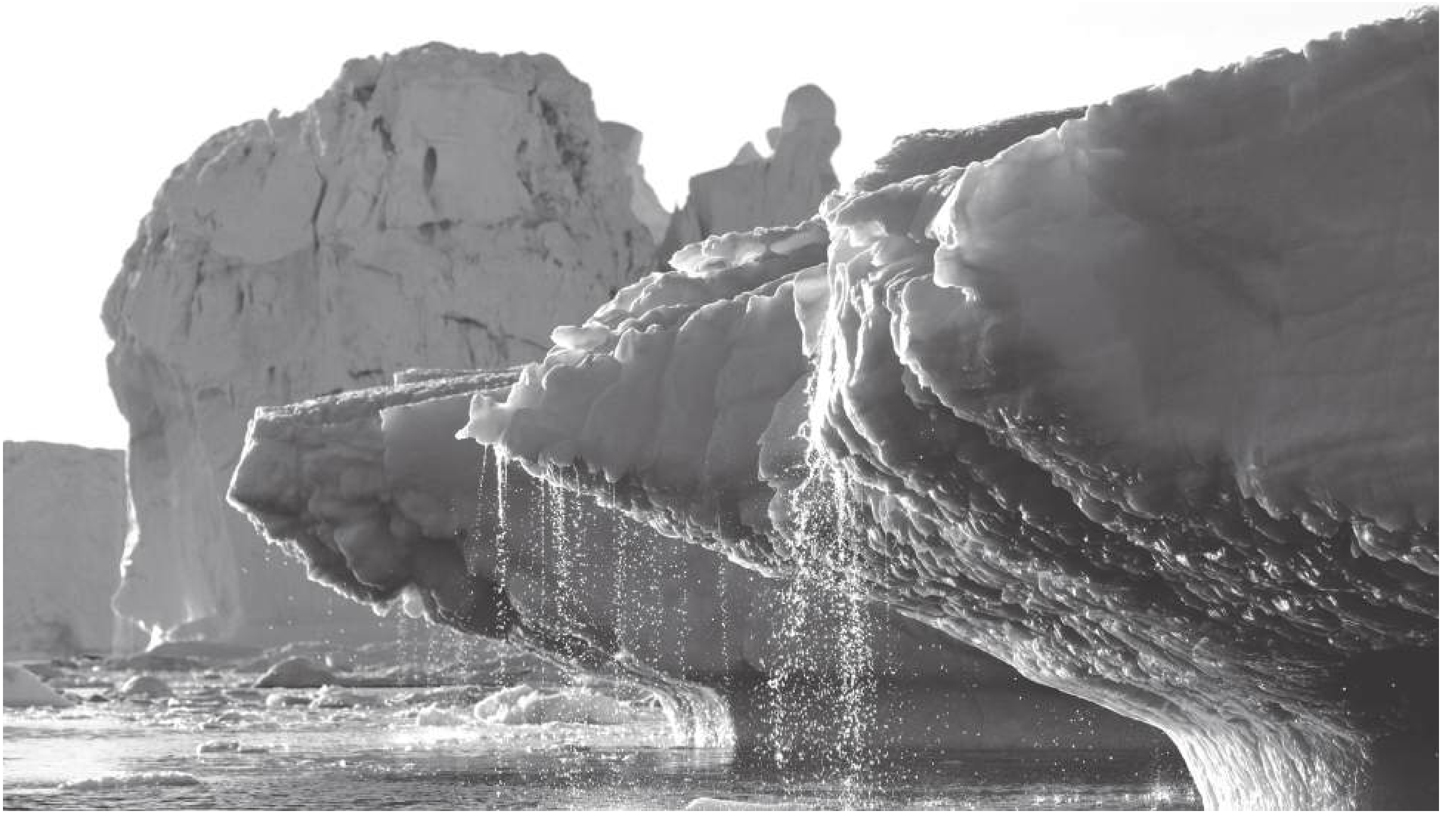

ग्रीनलैंड में जिस गति से बर्फ पिघल रहा है उस से पूरी दुनिया को

महाविनाश का खतरा !

मानव जात ने जितनी तरक्की ५००० सालों में नहीं की थी इतनी पिछले पांच दशक में की है। वैसे देखा जाए तो औसत मानव जीवन सवलत भरा हो गया है। सवलत बढ़ती जा रही है। नए-नए साधनों का उपयोग बढ़ गया है। अनेक विकल्प उपलब्ध है। परिवहन तेजी से बढ़ रहा है, मनोरंजन के उपकरणों हथेली में आ गए हैं, एक के बाद एक नए संशोधने हो रहे हैं। उस से मनुष्य को एक से बढ़कर एक सवलते मिलती रहती है। यह सब चीजों से अपने जीवनशैली में बहुत ही बदलाव आया है और दिन प्रतिदिन बेहतर बनता जा रहा है।

पूरे विश्व में मनुष्य जाति की आबाढ़ी में जबरदस्त इजाफा हो रहा है। दुनिया में जमीन बढ़ती नहीं है इसी वजह से मनुष्य अपने निवास्थानो के लिए जंगलों का सफाया कर रहा है, घने पेड़ पौधों का खात्मा हो रहा है। अपनी सवलतो के लिए नए-नए संशोधन के लिए अध्यतन उद्योगो को खड़े कर रहे हैं। रहने के लिए बड़े-बड़े बिल्डिंग टावर बना रहे हैं। पहले पेड़ पौधों का जंगल था अब

ग्लोबल वोर्मिंग

◆ विजय साणथरा ◆

उसकी जगह सीमेंट कोंक्रीट की बिल्डिंगों का जंगल खड़ा हो गया है। बड़े-बड़े उद्योगों दिन रात चल रहे हैं। उसके वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण तेजी से बढ़ रहेहै। रास्ते पे ट्रैफिक की समस्याएं बढ़ रही है। हमारी जीवनशैली अब प्रकृति के अनुरुप न रहने से कुदरती स्रोतों का अविरत बिगाड़ हो रहा है। देखा जाए तो आज के दिनों में आने वाले सुनामी, तूफानों, धरती कंपो, अति बारिश, अकाल, नई-नई बीमारियां जैसी समस्याओं को हमने ही पैदा किया है। ऐसा भी कह सकते है कि हमने अपने पैरों पर खुद ही कुल्हाड़ी मारी है।

जब हम कोई एक जगह पर कुदरत को

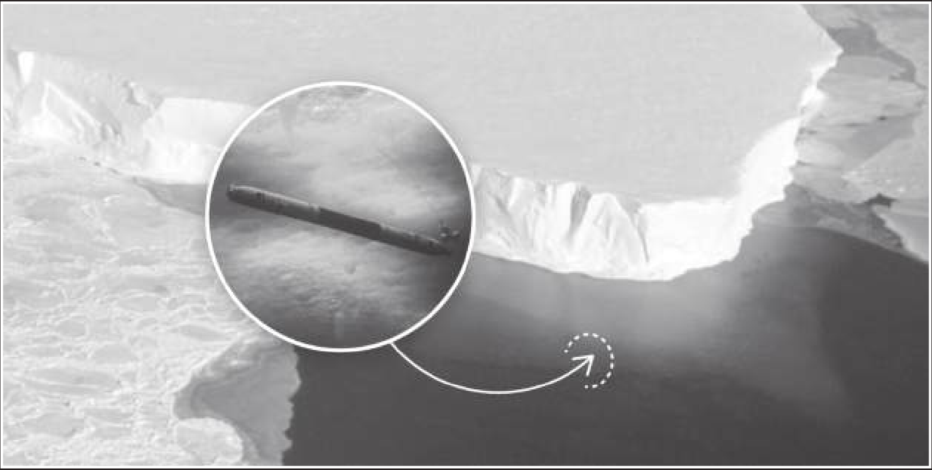

२०२१ में विज्ञानियों ने एंटार्टिका एक ऐसी हिमशीला की खोज कि थी जो पिघल रही हो ऐसी पुरी संभावना है । यह हिमशिला ३२५० स्क्वेयर मीटर की है । जिसको विज्ञानियों ने 'डूम्स डे' हिमशिला का नाम दीया था । क्यूंकि यह संपूर्णत: पिघल जाए तो असल में पृथ्वी पर विनाश आ जाएगा ।

जाने अनजाने में नुकसान पहुंचाते हैं तब उसके प्रतिक्रिया कहीं ना कहीं दूसरी जगह पर होती रहती है । ऐसा ही वातावरण को लेकर हो रहा है, मानव जाति ने पिछले १०० सालों में वातावरण को अनदेखा करके जो विकास किया है उसकी असर अब बहुत ही बुरी तरह से सामने आ रही है ।

डेनमार्क के पोलर पोर्टल नामक इंस्टिट्यूट के विज्ञानियों पिछले २० साल के आंकड़े का अभ्यास कर के इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि ग्रीनलैंड में जिस गति से बर्फ पिघल रहा है उस से बडी समस्याएं पैदा होगी । अमरिका- जर्मनी के वैज्ञानिकों ने तैयार किए ग्रेस प्रोग्राम के मुताबिक बर्फीले प्रदेशों की सेटेलाइट इमेज बन गई है । इस इमेज का अभ्यास करने के बाद डेनमार्क के विज्ञानियों ने जारी की हुई माहिती मुताबिक पिछले २० साल में आइस केपमें से ४७०० अबज टन बर्फ पिघला हैं । दूसरे तरीके से समझे तो ४७०० क्यूबिक किलोमीटर पानी अलग होकर समंदर में समा गया है । यह इतना पानी है कि इन सब पानी का जत्था अमरिका खंड नजदीक संग्रहित किया जाए तो पूरा अमेरिका खंड २ फीट तक पानी में डूब सकता है । इस घटना से यह भी अंदाज आया है कि समुद्र में १ सेंटीमीटर जितना जलस्तर बढा है ।

वैसे तो पूरी दुनिया में सदियों से जमा हुआ बर्फ तेजी से पिघल रहा है । लेकिन ग्रीनलैंड के पश्चिम किनारे के नजदीक बर्फ उससे भी ज्यादा गति से पिघल रहा है । आर्कटिक विस्तार में गर्मी बढ़ रही है । पृथ्वी के ईस हिस्से में तापमान ३ से ४ गुना बढ़ गया है । नासा के नतीजे में भी पाया गया था कि आर्कटिक समुद्र गर्म होने से ग्रीनलैंड की नजदीकी में बर्फ तेजी से पिघल रहा है । ग्रीनलैंड की आइस केप पर इसकी सीधी असर होने से वह पिघल रहे हैं । एक ओर से प्रदूषण की गहरी असर उस पर हो रही है, तो दूसरी ओर से क्लाइमेट चेंज की वजह से भी हवा गर्म हो गई है । इस दोनों वजह से सदियों से जमा हुआ बर्फ पर असर हो रहा है । इसलिए बर्फ का ऊपर का हिस्सा नरम होने से आहिस्ता आहिस्ता पिघलने लगता है ।

थोड़े समय पहले ही अमेरिका स्पेस एजेंसी नासा के वैज्ञानिकों के प्रसिद्ध हुए एक अहेवाल में भी ग्रीनलैंड की आइस स्केप की चिंता जताई गई थी । पिछले २५ सालों में आर्कटिक समंदर का तापमान ६ से ७ गुना बढ़ गया है । ग्रीनलैंड की रर आइस केप में इतना बर्फ है कि जो वह सपूर्णत: पिघल जाए तो पूरी दुनिया के समुद्र की जलस्तर की सपाटी में २० फुट की बढ़ोतरी हो सकती है । अगर ऐसा होता है तो दुनिया के कई तटीय विस्तारों के बड़े-बड़े शहरों पानी में डूब जाएंगे । जिसमें हमारे देश का आर्थिक पाटनगर मुंबई भी चपेट में आ सकता है ।

क्लाइमेट एंड एटमॉस्फेयर साइंस जनरल के एक चिंताजनक अहेवालों के मुताबिक दुनिया के सबसे ऊंचे पर्वत माउंट एवरेस्ट का बर्फ पिछले २५ साल से बहुत ही तेज गति से पिघल रहा है । विज्ञानियों की एक टीम ने एवरेस्ट शिखर पर ३२ फुट लंबे बर्फ के टुकड़े में से सैंपल लेकर उसका अध्ययन किया था । इससे यह पता चला कि २००० की सालों से एवरेस्ट के शिखर के आसपास जमा हुआ बर्फ अब नीचे गिर रहा है । क्लाइमेट चेंज साइंटिस्ट पौल मेवेस्की ने कहा कि दुनिया के सबसे ऊंचे शिखर पर २००० सालों से रहा बर्फ ने १९९० के दशक में पिघलना चालू किया है । । वैसे तो उसकी शुरुआत १९६० के बाद हो गइ थी लेकिन उस समय यह इतने बड़े पैमाने पर असर नहीं हुई थी इसलिए नजर में नहीं आया था लेकिन १९९० के बाद अचानक यह बर्फ तेजी से पिघलने लगा था ।

अमरिका की मैने यूनिवर्सिटी के संशोधको की टीम ने पूरी दुनिया के ऊंचे ग्लेशियरों का अध्ययन किया था । नमूने इकट्ठे करके वहां कितना बर्फ कब से पिघल रहा है । बाद में इस निष्कर्ष पर पहुंचे की दुनिया के ऊंचे शिखर में पिछले २५ सालों में १८० फुट बर्फ पिघल रहा है । उसकी असर अभी नहीं दिखाई दे रही है लेकिन उस शिखरों

थोड़े समय पहले ही अमेरिका स्पेस एजेंसी नासा के वैज्ञानिकों के प्रसिद्ध हुए एक अहेवाल में भी ग्रीनलैंड की आइस्केप की चिंता जताई गई थी। पिछले २५ सालों में आर्कटिक समंदर का तापमान ६ से ७ गुना बढ़ गया है। ग्रीनलैंड की रर आइसकेप में इतना बर्फ है कि जो वह सपूर्णत: पिघल जाए तो पूरी दुनिया के समुद्र की जलस्तर की सपाटी में २० फुट की बढ़ोतरी हो सकती है।

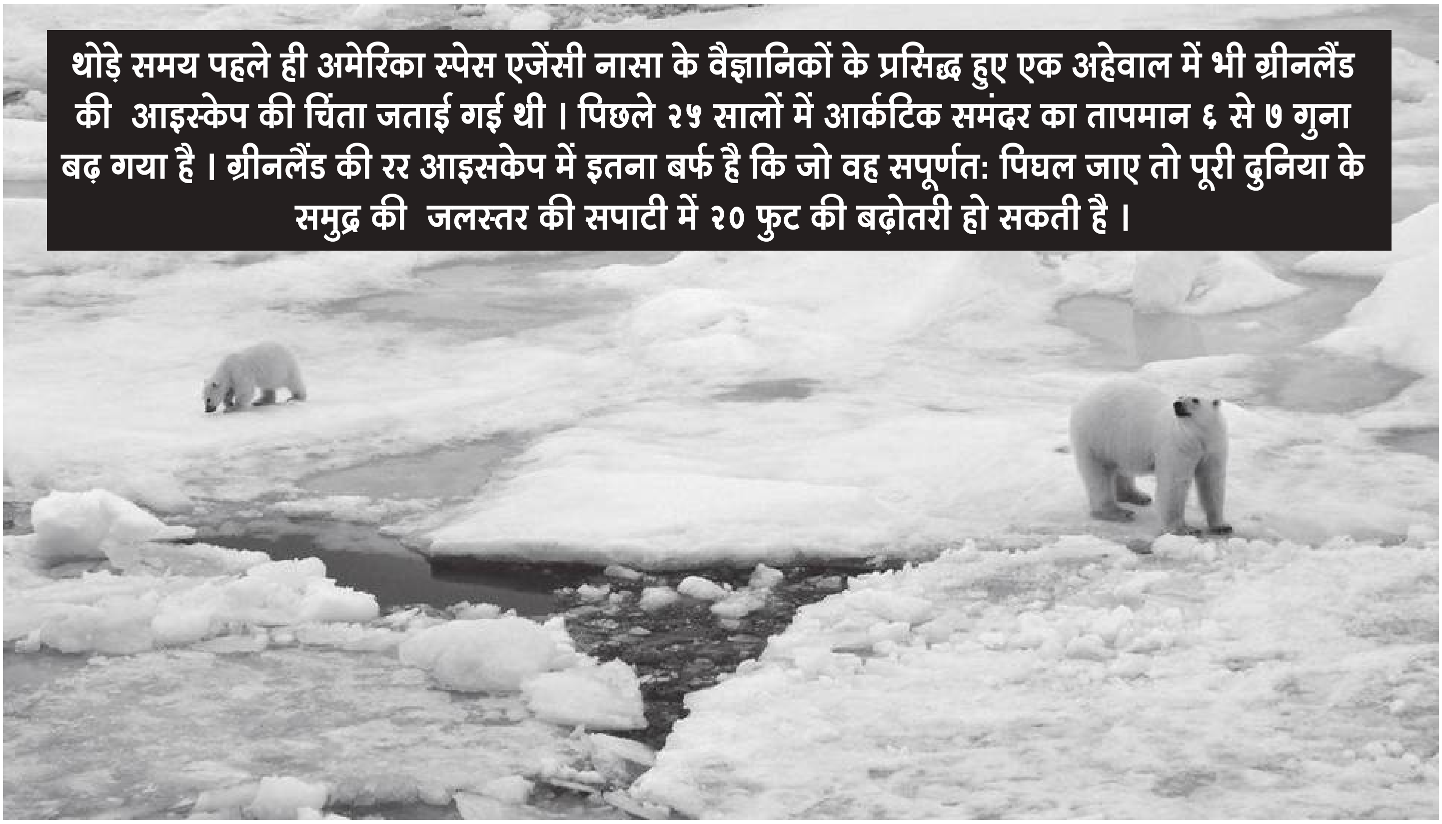

की ऊंचाई लंबे अंतर पे नोंधपात्र तरीके से कम हो जाएगी।

ऑस्ट्रेलिया की साउथ वेस्ट यूनिवर्सिटी के संशोधको ने थोड़े समय पहले एंटार्टिका के बर्फ पर विस्तार पूर्वक अध्ययन किया था तब उनको मालूम पड़ा की एंटार्टिका की बर्फ की चादरें खतरे में है। वैज्ञानिकों जब पश्चिमी एंटार्टिका में गए तब उनको यह ध्यान में आया कि उस विस्तार में बर्फ के ऊपरी स्तर पिघल रहा है। फरवरी, २०२० में ६ तारीख को एंटार्टिका में सबसे गर्म दिन दर्ज हुआ था। उस दिन तापमान का पारा १८ सेल्सियस डिग्री तक पहुंच गया था। यह तापमान का आंकड़ा देखकर वैज्ञानिको चौंक पड़े थे। क्योंकि जो ऐसी ही गर्मी एंटार्टिका में पडनी शुरू होगी तो इस गर्म वातावरण में हाल में जिस गति से बर्फ पिघल रहा है उससे कहीं ज्यादा तेजी से बर्फ पिघलने लगेगा। २०२१ में विज्ञानियों ने एंटार्टिका एक ऐसी हिमशीला की खोज कि थी जो पिघल रही है ऐसी पुरी संभावना है। यह हिमशिला ३२५० स्क्वेयर मीटर की है। जिसको विज्ञानियों ने 'डूम्स डे' हिमशिला का नाम दीया था। क्यूंकि यह संपूर्णत: पिघल जाए तो असल में पृथ्वी पर विनाश आ जाएगा। २० साल पहले ५०० अबज टन की एक हिमशिला एंटार्टिका से अलग होने की वजह से इसमें पतली तिराड आ गई थी। इस तिराड से मानवजात को पहला गंभीर खतरे का इशारा किया था। अगर यह महाकाय हिमशिला में से पानी बनना शुरू हुआ तो २१०० के वर्ष तक समंदर की सपाटी अनुमान से ज्यादा ऊंची आ सकती है और उसमें सिर्फ दुनिया के बड़े-बड़े शहर ही नहीं बल्कि पूरे पूरे देश डूब सकते हैं।

राहत की बात यह है कि एंटार्टिका के विस्तार में बर्फ ग्रीनलैंड की तुलना में कम गति से पिघल रहा है। अगर वह बर्फ भी इतनी ही तीव्रता से पिघलने लगे तब उसके कारण जो भी पानी समंदर में मिले वह निश्चित रूप से पृथ्वी पर महाविनाश ला कर रहता। नासा के अहेवाल को ही मान के चलिए तो एंटार्टिका का ३०% से भी ज्यादा बर्फ पिघल जाए तो समुद्र की सपाटी डेढ़ सौ फिट बढ़ जाएगी तो फिर बाकी क्या रहेगा?

यह एहवाल निश्चित रूप से खतरे की घंटी समान है। अंधाधुंध विकास को लेकर मानवजात ने अविचारी घातक रूप से दौड़ लगाई है उस से प्रकृति से विरुद्ध माहौल पैदा हुआ है। जिससे गंभीर परिणाम आनेवाले समय में उसको भुगतना ही पड़ेगा। अब भी समय है कि निश्चित कदम उठा के पर्यावरण को बचाया जा सकता है, पृथ्वी पर रहे बर्फ की चादरों को बचा के समंदर का पानी गर्म होने से बच जाएगा। उसके लिए प्रदूषण को नियंत्रण में लेना होगा। पूरे विश्व में सभी देशों को उसके बारे में गंभीरता से सोच कर सही कदम उठाके उसकी अमलवारी करके आने वाली पीढी को सवलत भरी जिंदगी देनी है या स्थाई मजबूत रूप से सुखी जीवन प्रदान करना है। यह तय करना पड़ेगा।

डायनामाइट की शोध कैसे हुई ?

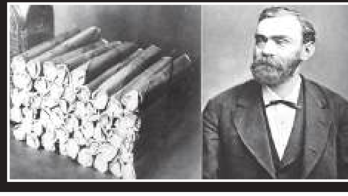

देखा जाए तो हम रोजाना विश्व में अलग-अलग जगह से नए नए आविष्कारो होते रहते है। उसके बारे में पढ़ते रहते हैं। इस नवीनतम शोध मानव जीवन को कहीं ना कहीं असरकर्ता होती है। लेकिन स्फोटक पढार्थों की शोध ने पूरे मानव इतिहास को पलट दिया है। ऐसा कहा जाता है कि क्राइस्ट के पहले के समय में चीनी लोगों ने गन पाउडर की खोज की थी। लेकिन १४वीं सदी में यूरोप में गोला बारूद का उपयोग शुरू हुआ और पूरी दुनिया में फैल गया।

पुराने गन पाउडर में पोटेशियम नाइट्रेट, कोयले की भूकी और गंधक का उपयोग होता था। १९वीं सादी के अंत तक यही गन पाउडर उपयोग में लिया जाता था।

१८४५ में शोएनबीन नाम के जर्मन रसायन शास्त्री ने नाईट्रिक और सल्फ्यूरिक एसिड के मिश्रण में रुई के धागा डुबोके के तैयार किया। ऐसी रुई गन कॉटन रूप से या नाइट्रोसेल्युलॉस के नाम से प्रचलित हुआ। उसकी विस्फोटक शक्ति गन पाउडर से ज्यादा थी।

वही समय पर समय पर एशियानो सोब्रेरो नाम के एक इटालियन भी आम ग्लिसरीन पे प्रयोग कर रहा था। नाइट्रिक और सल्फ्यूरिक एसिड के मिश्रण में आहिस्ता आहिस्ता एक-एक बूंद ग्लिसरीन डाल के उसने नाइट्रोग्लिसरीन नाम के पदार्थ को बनाया था। यह पदार्थ गन पाउडर से भी ज्यादा विस्फोटक शक्तिशाली था।

बाद में करीबन दो दशक के बाद अल्फ्रेड नोबल नाम के स्वीडिश रसायन शास्त्री ने अकस्मात रूप से ही डायनामाइट की खोज की थी। वह नाइट्रोग्लिसरीन पे प्रयोग कर रहा था। उसे तैयार करने में बहुत ही कठिनाई आती थी। लेकिन यह पदार्थ इतना खतरनाक था कि उसकी हेरा फेरी करने में बहुत बड़ा जोखिम होता था अगर सावधानी

शोध-संशोधन

राजन कालरीया-राजकोट

ना बर्ती जाए तो हेराफेरी करते समय ही इसका विस्फोट हो जाता।

एक दिन किसलगर यानी कि ज्वालामुखी की मिट्टी में से बनी हुई संदूक में रखा गया नाइट्रोग्लिसरीन का केन, नोबेल बाहर निकल रहा था तब उसने देखा कि केन में से नाइट्रोग्लिसरीन लीक हो रहा था। केन में से बाहर आया नाइट्रो ग्लिसरीन और किसलगर (एक तरह की मिट्टी) साथ में मिल गए थे और एक पत्थर जैसा पदार्थ बन गया था और यह पत्थर जैसा पदार्थ ही डायनामाइट के नाम से प्रचलित हुआ, जो काम शक्ति से विस्फोट होकर नाइट्रोग्लिसरीन के बदले में कम संवेदनशील था।

यह भी सोचने वाली बात है कि, डायनामाइट की शोध वास्तव में अकस्मात रूप से ही हुई थी।

FORM IV

Statement about ownership and other particulars about
Magazine CRIME FORCE to be published in
the first issue every year after the last Month of February

1.	Place of publication	:	RAJKOT
2.	Periodicity of its publication	:	MONTHLY
3.	Printer's Name	:	RANJITSINH JESINGBHAI JADAV
	Nationality	:	INDIAN
	Address	:	"YOGESHWAR", 3 HANJRAJ NAGAR, OPP. RAILWAY SIGNAL OFFICE, RAJKOT-360001
4.	Publisher's Name	:	RANJITSINH JESINGBHAI JADAV
	Nationality	:	INDIAN
	Address	:	"YOGESHWAR", 3 HANJRAJ NAGAR, OPP. RAILWAY SIGNAL OFFICE, RAJKOT-360001
5.	Editor's Name	:	VIJAYBHAI BHAGWANJIBHAI SANATHARA
	Nationality	:	INDIAN
	Address	:	BLOCK NO:A-87, AALAP HERITAGE, SATYA SAI HOSPITAL ROAD, RAJKOT-5
6.	Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding	:	RANJITSINH JESINGBHAI JADAV
	More than one per cent of the total capital	:	100 %

I, RANJITSINH JESINGBHAI JADAV hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.
Date 01-MAARCH-2024

Signature of Publisher
RANJITSINH JESINGBHAI JADAV

निजी अस्पतालों में मनस्वी तरीके से वसुली जाती फीस से सुप्रीम कोर्ट खफा।

तय की गई फीस की अमलवारी के बारे में केंद्र सरकार को सुप्रीम कोर्ट की कड़ी चेतावनी

ऑफबीट

◆ हृषिकेश बोरचे-मुंबई ◆

आज के महंगाई के युग में मानवी अपने परिवार के जीवननिर्वाह के लिए लगातार दौड़ता रहता है। अपने बच्चों को पढाने के लिए शुरुआत में ही प्राथमिक शाला से पहले ही उसको प्री प्राइमरी से फीस के लिए बड़ी रकम का इंतजाम करना पड़ता है। जैसे जैसे बच्चों की पढ़ाई आगे बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे उसको पढाने के लिए वो बेचारा कड़ी मेहनत कर के फीस का इंतेजाम करता रहता है और कॉलेज के टाइम पर तो उसको अपने बच्चों को डिग्री में पढ़ने के लिए कहां कहां से मातबर फीस का इंतेजाम करना पड़ता है। वैसे ही एक और समस्या है परिवार के सदस्यों की आरोग्य सारवार की। जब भी परिवार का कोई सदस्य गंभीर बीमारी या एक्सीडेंट का शिकार बन जाए तब वो खानगी अस्पतालों के डॉक्टरों की फीस, सारवार के खर्च के विचार से ही घबरा जाता है। वैसे तो केंद्र सरकार ने आयुष्मान हैल्थ कार्ड बनाकर अच्छा किया है। सामान्य नागरिक भी अस्पताल में होने वाले खर्चे से बच जाता है। लेकिन कई बीमारियां ऐसी होती है, जो निजी अस्पताल वाले ऐसे हैल्थ कार्ड चलाते नहीं है।

निजी अस्पताल में एक बार मरिज ने पैर रखा, मानो के वह कर्ज के बोझ में दब गया। क्योंकि ऐसी अस्पतालों में दाखिला लेते समय पर ही अस्पताल द्वारा डिपॉजिट के रूप में एडवांस पैसे मांगे जाते हैं। अस्पताल में ज्यादा रुकना पड़े तो रोज सुबह ही ऐसी अस्पतालों की मैनेजमेंट की ओर से यह कहा जाता है कि आज आपको इतना पैसा जमा करवाना होगा, बाद में मरीज की सारवार हो सकेगी। दर्दी के घर वाले बेचारे अपने घर के

सदस्य को बचाने या ठीक करने के लिए जब अस्पताल में आते हैं तब वह कुछ भी नहीं पूछते कि सारवार में कितना खर्च लगेगा। क्योंकि तब वह अपने घर के सदस्य की बीमारी के बारे में ज्यादा परेशान होते है। बस एक ही मकसद होता है जल्दी से वह ठीक हो जाए, खर्च कितना भी हो।

ज्यादातर निजी अस्पतालों में जब आप जाएंगे तो आपको वहां के डॉक्टर द्वारा इतना डराया जाता है कि आप तुरंत ही बिना कुछ सोचे बोले सिर्फ एक ही बात करेंगे, डॉक्टर सा'ब कुछ भी हो, कितना भी खर्च क्यों ना हो? हमारे इस सदस्य की तात्कालिक सारवार शुरू करके उसको जल्दी से ठीक कर दो। डॉक्टर तो जानते ही हैं कि वहां पर आया बीमार आदमी इतना गंभीर बीमार नहीं है कि नहीं कोई गंभीर बीमारी से जूझ रहा है। ज्यादा पैसा निकालने के लिए उसको ऐसी डरावनी डॉक्टर की मेडिकल भाषा में बात की जाती है। कई बार कुछ मेडिकल टेस्ट की जरूरत भी नहीं होती फिर भी डॉक्टर के द्वारा ऐसा कहा जाता है कि पहले यह सब टेस्ट करवा लो जरूरी है। रिपोर्ट आने के बाद हम आगे की सारवार के बारे में तय करेंगे। कई बार ऑपरेशन की भी जरूरत नहीं होती और सिर्फ दवाईओ से ही मरीज ठीक हो जा सकता है लेकिन डॉक्टर द्वारा ऐसे बीन जरूरी ऑपरेशन करके अपनी जेबें भरी पर जाती है।

थोडे समय पहले ही एक विदेशी संस्था द्वारा किए गए सर्वे के मुताबिक भारत में ज्यादातर किस्से में ऑपरेशन की जरूरत ना होने पर भी मरीज को जबरदस्ती ऑपरेशन करने के लिए कहा जाता है। हार्ट, नी रिप्लेसमेंट, प्रेगनेंसी वगैरह में ज्यादातर किस्से में ऑपरेशन करना जरूरी नहीं होता है फिर भी डॉक्टर द्वारा मरीज को ऑपरेशन करवाने के लिए मजबूर किया जाता है। और ऐसे में मरीज भी बेचारा घबरा जाता है और

हार्ट, नी रिप्लेसमेंट, प्रेगनेंसी वगैरह में ज्यादातर किस्से में ऑपरेशन करना जरूरी नहीं होता है फिर भी डॉक्टर द्वारा मरीज को ऑपरेशन करवाने के लिए मजबूर किया जाता है।

डॉक्टर की बात मानकर ऐसे बिन जरूरी ऑपरेशन कर के लाखों रुपया अस्पताल में खर्च कर देता है (उसके पास दूसरा कोई विकल्प भी नहीं होता) वैसे देखा जाए तो मानो के ऐसे निजी अस्पतालों में सरियाम जाहिर मे मरीजों को ऐसे तरीके से लूटा जाता है और मरीज कुछ कर भी नहीं सकता।

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने नाराज हो के ऐसे निजी अस्पताल के द्वारा मनस्वी रूप से फीस वसूलने पर केंद्र सरकार को कड़े निर्देश दिये है। निजी अस्पतालो द्वारा सेंट्रल गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम द्वारा नियत किए गए दाम ही लागू करने का निर्देश दिया है।

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को कड़े शब्दों में आदेश दिया है कि निजी अस्पतालों में जल्दी ही मरीजों की सारवार के लिए सेन्ट्रल गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम के तले तय किए गए निश्चित दर लागू करवाओ अगर ऐसा करने में सरकार असमर्थ होगी तो सुप्रीम कोर्ट इसका अमल करवाएगी। और कहां है कि राज्यों के साथ मसलते करने के बाद मेट्रोपोलिटन शहरों, शहरों और नगरों में लोगों की सारवार के लिए और उसके उपचार के लिए प्रमाणभूत दर की सूचि जाहिर करे।

टाइम्स ऑफ़ इंडिया ने कहा है की सुनवाई के दौरान सरकार ने कोर्ट में ऐसी दलीले पेश की, कि हमने राज्यों को बार-बार इसके बारे में लिखित में दिया है लेकिन राज्यों से कोई उत्तर नहीं दिया है, तब सुप्रीम कोर्ट में कड़े शब्दों में सरकार को कहा कि देश के नागरिकों का स्वास्थ्य की जतन का मूलभूत अधिकार है। इसमें से ऐसे बहाने बताकर सरकार अपनी जिम्मेवारी से मुकर नहीं सकती। यह भी कहा कि केन्द्र आरोग्य सचिव एक महीने के भीतर प्रमाणभूत दरों की सूचना जारी करने के लिए राज्यों के आरोग्य और सचिवों के साथ एक बैठक योजे।

वास्तविकता तो यह है कि देश के हर एक नागरिक को अपनी आरोग्य की संभाल रखना सबसे बड़ा और महत्वाकारी पासा में से एक है। लेकिन आगे बताया ऐसे कई ऐसी निजी अस्पतालों में अपने तरीके से मनस्वी रूप से फीस वसूल की जाती है, जो सारवार लेने के लिए आते मरीजों को बहुत मुश्किल में डाल देती है।

वैसे तो ऐसे कई कानून है जो आम नागरिकों के हित में बनाए गए हैं। लेकिन ऐसे कानूनों की अमलवारी सही तरीके से होती नहीं है। आम नागरिक बेचारा 'जाए तो कहां जाए' ऐसी स्थिति में भगवान भरोसे अपना जीवन जीने को मजबूर हो जाता है। ऐसे कई कानून का अमल करवाने के लिए सुप्रीम कोर्ट का सहारा लिया जाता है और सुप्रीम कोर्ट भी कई बार अचंबित हो जाती है कि यह क्या हो रहा है ? सालों से कानून बना हुआ है फिर भी उसके अमल वारी नहीं होती है तब उसके द्वारा सरकार को कड़े निर्देश दिए जाते हैं। लेकिन भई, यही तो हमारे देश की राजनीति है, क्योंकि कई बार, कई किस्सो में सरकार सुप्रीम कोर्ट के ऐसे कानूनों को घोलकर पी जाती है।

देखते हैं, यह १४ साल पुराना कानून क्लीनिकल एस्टेबिलशमेंट केंद्र सरकार के नियमों की कब अमलवारी होती है।

कोलेस्ट्रोल

आधुनिक जीवनशैली की पैदाइश

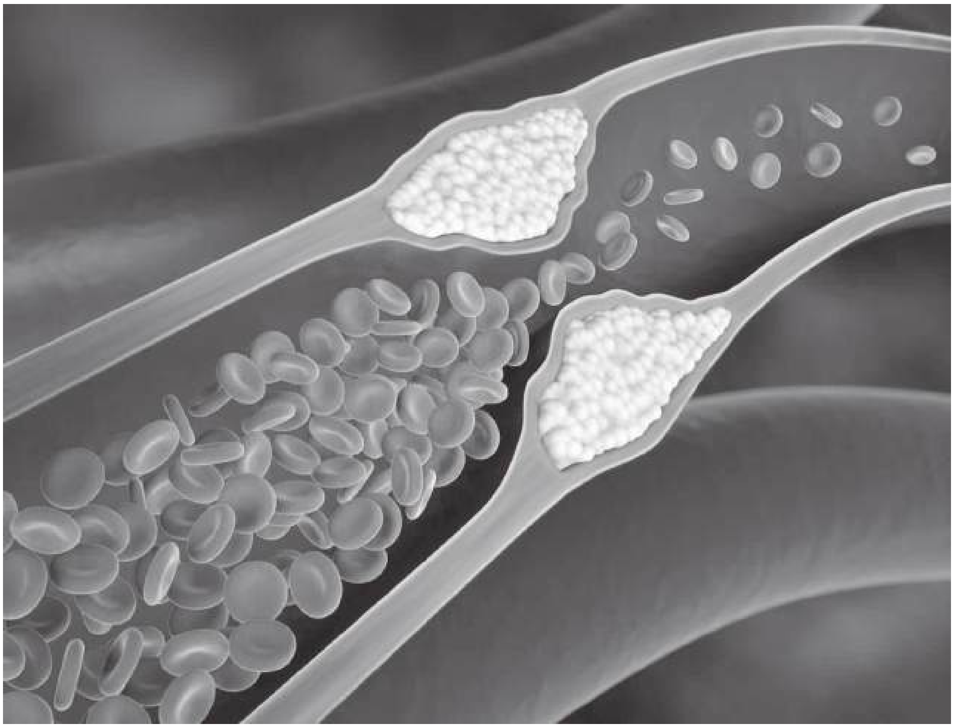

आज के मानवी को अपने परिवार का जीवन निर्वाह चलाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है । महंगाई के मार और परिवार में कमाने वाले कम लोग की वजह से ज्यादा मेहनत करनी पड़ रही है । आज के मानवी की जीवन शैली मशीनों की तरह ऑटोमेटिक चलने वाली हो गई है । समाज में दूसरे से खुद को अच्छा साबित करना और घरवालों की ख्वाहिशे पूरी करने के लिए वो दौड़ता ही रहता है । उसके पास ना खाने का समय है, ना अच्छी तरह आराम करने का । कमाने में वह इतना लीन हो जाता है कि खुद के स्वास्थ्य के बारे में भी नहीं सोचता । वो भूल जाता है कि ईश्वर ने हमें जो शरीर दिया है, उसको स्वस्थ रखने की जिम्मेदारी भी हमारी है । शरीर स्वस्थ रहेगा तो वह भी सही तरीके से कम कर पाएगा । शरीर स्वस्थ रखने के लिए सही खुराक,सही नींद और सही व्यायाम या कसरत - योग, मेडिटेशन भी करना चाहिए । ऐसा करने से मानवी शारीरिक और मानसिक तौर पर स्वस्थ रह सकता है जो अपने और अपने समाज और देश के लिए भी जरूरी है ।

लेकिन ऐसा नहीं होने से वो बेचारा डॉक्टर और अस्पतालों का चक्कर काटता रहता है और अपना समय और पैसा बर्बाद करता रहता है

स्वास्थ्य

◆ योगेन्द्र पंड्या-राजकोट ◆

। ऐसी भागदौड़ वाली जिंदगी से शरीर के लिए बेपरवाह होने से समय जाते शरीर में कई प्रकार की बीमारीयां आ जाती है । इसलिए अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए थोड़ा समय निकालकर, सही खुराक लेकर और थोड़ा व्यायाम करके यह सब बीमारियों को हम अपने से दूर रख सकते हैं ।

आज हम जानेंगे हमारे शरीर में कोलेस्ट्रॉल के बारे में । कोलेस्ट्रोल क्या है ? कोलेस्ट्रॉल की बीमारियां कैसे होती है और उसके ठीक करने का उपाय क्या है ?

१८ वीं सदी की शुरुआत में माइकल शेपरीअल नाम के फ्रेंच वैज्ञानिक ने पिताशय में बनने वाली पथरी (गॉलब्लैडर स्टोन)के बारे में संशोधन दौरान एक खास पदार्थ की शोध की थी जो ग्रीक 'कोले' यानि की पित्त जैसा पीला और 'स्टेरिओस' मतलब सख्त या कड़क जैसे दो शब्दों को जोड़कर 'कोलेस्ट्रोल' का नाम दिया । बाद में १८३५ में दूसरे एक संशोधन में शरीर में कोलेस्ट्रॉल की ज्यादा मात्रा के संग्रह से आती समस्याओं के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी । १८३० में एडल्ट विंडाउस नामक वैज्ञानिक ने इसकी रासायनिक फॉर्मूला C27h4SOH की शोध की । समय बितने पर कोलेस्ट्रॉल के बारे में लोग ज्यादा जानने लगे तो दूसरी ओर शरीर में कोलेस्ट्रॉल के उच्च स्तर वाले लोगों की संख्या भी बढ़ती गई ।

वास्तव में कोलेस्ट्रॉल मिण जैसा चिपकता पदार्थ है । शरीर में लगभग सभी कोषों में उसकी मात्रा कम या ज्यादा पाई जाती है । लेकिन दिमाग, रीड की हड्डी,

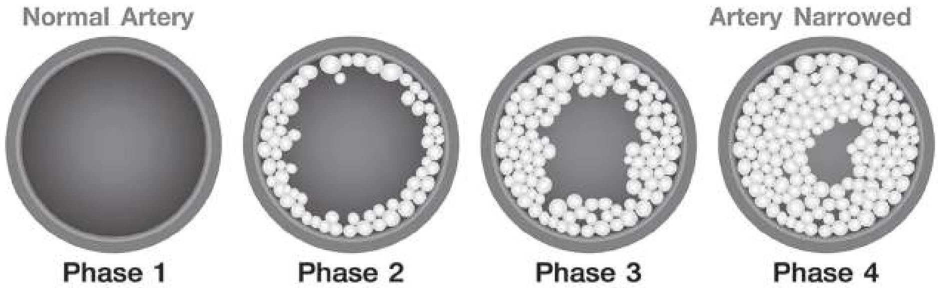

एड्रिनल ग्लैंड और लीवर में विशेष मात्रा में होता है। स्वाद और गंध रहित स्फटिक रूप के आकार का यह पदार्थ १४९ सेल्सियस जितना उच्च तापमान में पिघलता है और पानी, एसिड जैसे कुछ द्रव्यों और क्षारो में यह पिघलता ना होने के कारण ही शरीर में ही जमा होता रहता है। यह प्रोटीन के साथ सम्मिलित हो के लो प्रोटीन के रूप में दिखाई देता है।

इसमें भी एचडीएल यानि कि वेरी लो डेंसिटी लियो प्रोटीन जैसे उप विभागों में बिखरा हुआ देखने को मिलता है। शरीर के लिए एचडीएल अच्छा और उपयोगी कोलेस्ट्रॉल गिना जाता है। जबकि, एलडीएल और वीएलडीएल बूरे कोलेस्ट्रॉल के रूप में जाना जाता है। अच्छे कोलेस्ट्रॉल शरीर के लिए बहुत उपयोगी है जो कोषों की दीवार, एड्रीनल ग्लैंड के हार्मोन, दिमाग के ज्ञानतंतु की मेंब्रन बनाने में महत्व की भूमिका बजाता है। चर्बी को पचाने वाला पित्त के निर्माण के लिए भी उसकी उपयोगिता रहती है।

बुरा कोलेस्ट्रॉल शरीर में बढ़ने से लहू की नलिकाओं की समस्याओं को बढ़ा देता है और उस से एथरोस्केलरोसीस की परिस्थिति का सर्जन होने से हाई ब्लड प्रेशर बढ़ता है। उसके साथ ही हृदय के संलग्न बीमारियां जिसमें मायोकार्डियल, एल्केमिया, हार्ट अटैक और मस्तिष्क के संलग्न बीमारियां जैसे की पेरालिसिस और स्ट्रोक भी हो सकता है।

शरीर में कोलेस्ट्रॉल बढ़ने के कई कारण है। जैसे की वारसाकीय या आनुवांशिक बाबते। बिस्मार किडनी, डायबिटीज, थायराइड ग्रंथि की निष्फलता, गाउट, प्राणीज चर्बी, जीस में सैचुरेटेड फैट की मात्रा ज्यादा होती है ऐसे माखन, घी, चीज़ और एंडे, मटन टेलो, मछली, कोड़ लीवर तेल का ज्यादातर सेवन, वनस्पति घी और नारियल के तेल का ज्यादातर उपयोग, आल्कोहल, कोफी, पोटैटो चिप्स, तेल की वैफर्स, ग्रेवी या सॉस वाला कलर, चॉकलेट, पेस्ट्री और मावा की मिठाई जैसे ज्यादा मात्रा वाली सर्करा युक्त पदार्थ का उपयोग, बिना मेहनत का जीवन, व्यायाम का अभाव और मानसिक तनाव कोलेस्ट्रॉल को बढ़ा सकता है।

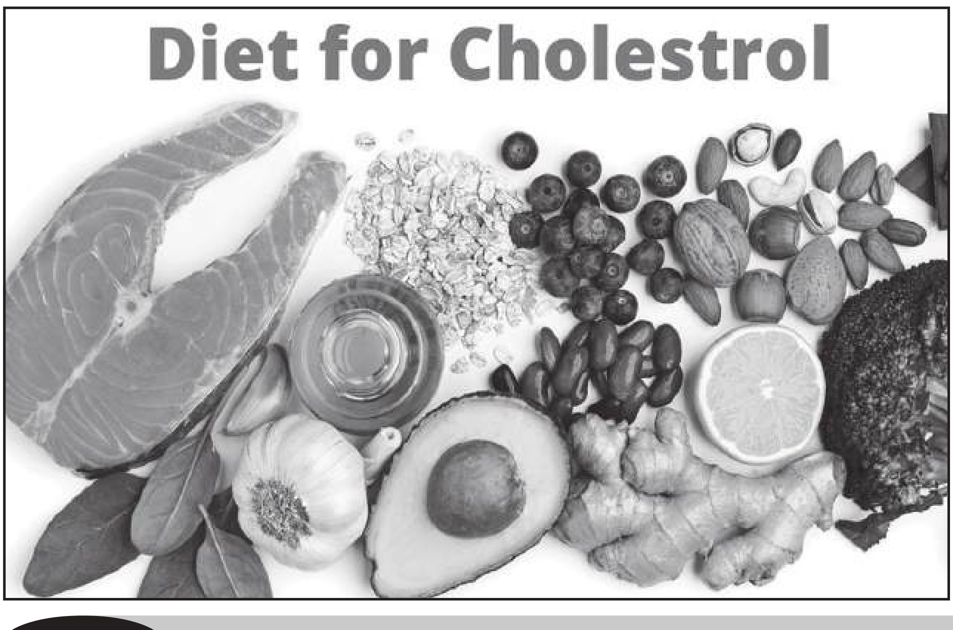

कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित करने के लिए आगे बताए गए कारणभूत खुराकी द्रव्यो का त्याग करना और रोजाना खुराक में लहसुन, गाजर,अदरक, मूली,अंगूर, आमला, ग्रीन टी और हींग का जरूरी मात्रा में उपयोग करना चाहिए। करडी का तेल (से फ्लावर तेल), सूर्यमुखी का तेल (सनफ्लावर तेल), सोयाबीन के तेल और ओलिव ऑयल का सेवन खुराक में कर सकते हैं। व्हीट जर्म तेल जिसमें विटामिन ई होता है, उसका उपयोग तबीबो द्वारा बताइ रीत से कर सकते हैं। आलसी जीवन छोड़कर थोड़ा व्यायाम करके और तनाव मुक्त होकर खुशी से जीने से भी इस समस्याओं को अपने से दूर रख सकते हैं।

कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित करने के लिए समय-समय पर सीरम लिपिड प्रोफाइल रिपोर्ट करा के तबीबी सलाह लेना जरूरी है। आगे दर्शाई गई तकेदारी का कड़क तरीके से पालन करके सहायक रूप में यहां बताए गए काढ़ा को दिन में एक बार लंबे समय के लिए सुबह बिना पानी पिए लेना चाहिए।

काढ़ा: चूर्ण रूप में मेथी और जेठीमध ५- ५ ग्राम, हरडे, आलू, आमला, तमालपत्र, तज चालीस पत्र, अर्जुन छाल, अजमा २- २ ग्राम और काली मिर्च, लिंडी पिपर या नामक १- १ ग्राम लेकर अंदाजित एक गिलास उबलते हुए पानी में डालकर बर्तन स्टव से नीचे उतारकर ठंडा होने पर उसको छांटकर उसमें एक चमच सहद मिलाकर सेवन करना चाहिए।

मुंबई के अंडरवर्ल्ड की खोफनाक बातें

दोस्तों पिछले में हमने देखा कि हाजी मस्तान के पठानों ने दाऊद के दो लोगों, अबू बक्र और एजाज को बिना वजह पीटा था और उसका बदला लेने के लिए दाऊद और उसके गुर्गो ने मस्तान के आंगड़िया में आने वाले रुपया ५ लाख लुंटने की योजना बनाई थी अब आगे...

दाऊद ने अपने सात लड़के अबू बक्र, युसूफ खान, एजाज झींकी, अजीझ ड्राइवर, अब्दुल मुतलीब ,सैयद सुल्तान और शेर खान को इकट्ठा किया। इन सात में बाद वाले दो लड़के उसके खास थे।

सैयद सुल्तान अयूबी मजबूत कंधे, उभरी हुई मांसपेशियां और ताकतवर जिस्म का मालिक था। २० साल की उम्र में अभी-अभी उसे मिस्टर मुंबई के खीताब के लिए चुना गया था और वह उस बॉडी बिल्डिंग प्रतीयोगिता से सबसे बड़े खिताब की होड़ में था जो आने वाले साल में मिस्टर इंडिया के खीताब का शुरुआती पायदान बनने वाला था। ७० के दशक में मांसपेशियों वाले लोग बहुत कम दिखाई देते थे। उस समय की लोकप्रिय फिल्में भी राजेश खन्ना और जितेंद्र जैसे साफ सुथरा चॉकलेटी चेहरे वाले नायकों को पेश किया करती थी। इसलिए जब अयूबी मिस्टर मुंबई से मिस्टर महाराष्ट्र से मिस्टर इंडिया तक पहुंचा तो वह अखबारों ने अपनी जबरदस्त जिस्म की तस्वीरों के साथ लगातार सुर्खीयों में बना रहा था। कहा जाता है कि जब वह दक्षिण मुंबई की मरीन ड्राइव पर टहलने निकलता था तब औरतें उसके विशाल कंधों को देखकर उस पर मर मिटटी थी दूसरी और शेर खान पठान ऊर्फ शेरसिंह अपनी दमदार, दहला देने वाली आवाज के लिए जाना जाता था।

दाऊद उस वक्त अपनी किशोरावस्था से बाहर आया था और अभी-अभी उसको मूंछें आई थी। उसने खास डोंगरी लड़के के तमाम लक्षण अपनाए हुए थे;बोली, वाकछल , परमज्ञानी होने का रवैया। तब भी उसे अंडरवर्ल्ड में अनाड़ी समझा जाता था क्योंकि उसके पास बाशु या हाजी मस्तान जैसा पैसा नहीं था, और हर कोई उसे महज एक तलबगार डॉनके रूप में ही देखते थे।

कनार्क बंदर इलाका मुंबई के तीन बाजारो;

मोहट्टा मार्केट, मनीष मार्केट और क्रोफोर्ड मार्केट जो औपनिवेशक युग की एक विरासत है, के सीमांत पर पड़ता है। यह पूरा का पूरा इलाका उस वक्त तमाम तरह के कृषि उत्पादकों के थोक और फुटपार व्यापार का केंद्र हुआ करता था। यह भीड़भाड़ और शोर शराबे से भरी हुई जगह थी क्योंकी तमाम व्यापारी और दूरदराज के ट्रक यहां सामान उतारते थे। वह हमेशा हाथठेले बोरे या संदुके ढोते हम्मालो और सामान लादे बाजार में आवाजही करती गाड़ियों से आबाद रहता था।हर समय हड़बड़ी का माहौल होता था जिसमें हर कहीं कुछ ना कुछ चल रहा होता था।

इस नौशिखियों लुटेरो ने बहुत सारी फिल्में देख रखी थी और अब यह अपनी चोक्स योजना और तैयारी से उनकी नकल करना चाहते थे। इसलिए टैक्सी के अंदर आने और बाहर निकलने के दोनों सीरों की कारगर मोर्चाबंदी के लिए दो लोग नाटकीय अंदाज के कनार्क बंदर ब्रिज पर तैनात किए गए थे। जब के दो लोग मुसाफिरखाना के करीब खड़े हुए थे। यह आदमी लोहे की छड़ों,लाठीयों और गंडासो से लेश थे। बाकी के लड़कों को टैक्सी के रास्ते में रुकावट डालनी थी। यह लोग गंडासे, चाकू और देशी रिवाल्वर जिनको कट्टा कहा जाता है, लिए हुए थे। किसी तरह निरे इत्तेफाक से या बुरी योजना की वजह से, अयुबी,अबू बक्र,हनीफ और दूसरे बड़े खिलाड़ी और पूल पे तैनात हो गए या पीछे छूट गए और नतीजतन दाऊद ने खुद को सबसे अग्रिम मोर्चे पर पाया। पता नहीं यह उसकी नियती थी या दिलेरी की उसने खुद को सात लड़कों की इस मण्डली की अगुवाई करते पाया, जिन्हे जाने-अनजाने टेक्सी के रास्ते में रुकावट डालने की जिम्मेदारी दी गई थी टैक्सी जैसे की दाना बंदर की संकरी गली से बाहर निकलकर जुड़ने वाली सड़क की तरफ बढ़ती वैसे ही इन लोगों को हरकत में आ जाना था।

दोपहर २:०० बजे के आसपास , जेसे ही टेक्सी कनर्क बंदर ब्रिज के नीचे की सड़क से होकर बाहर आई, मुखबिर ने वाहन की तरफ इशारा किया,जिसका मतलब था कि यही वह कार है जिसमें पैसा रखा हुआ है। आश्चर्य की बात यह थी कि टेक्सी में पैसेंजर सीट पर मारवाड़ी किस्मत के दो आदमी बैठे हुए थे और आगे ड्राइवर के बगल में एक अंगरक्षक बैठा था। जैसे ही वह पुल से मोहम्मद अली रोड की तरफ जाने वाले रास्ते की तरफ बढ़ी,हमले के लिए तैनात यह सात लोग अपने हथियार तानें हुऐ तुरत ही टेक्सी की तरफ भागे।

कोई हिदायते नहीं दी गई थी और मंडली के सदस्यों के बीच कोई तालमेल नहीं था। हांलाकी सातों के सात सदस्य निहायत ही ऊलजलूल तरीके से टूट पड़े। पहला हमला शेर खान ने किया जिसने एक हाथठेला लिया और उसे कार से भिड़ा दिया, जिस से कार चिंचियाती हुई रुक गई। इसके पहले की मारवाड़ी और ड्राइवर हालत को समझ भी पाते कसरती जिस्म वाले शेर पठान ने ड्राइवर का दरवाजा खोला और उसे धमकाया कि वह एक इंच भी आगे बढ़ने की कोशिश ना करें।

सात लोगों से घींरे हुए होने का यह दृश्य मरवाडीयों के लिए दहशत में भर देने वाला था। हथियारों को देखकर उनका खून जम गया। उसने उनसे कहा कि वह कोई शोर शराबा या कोई भी ऐसी बेवकूफी भरी हरकत ना करें जिससे उसकी जान मुसीबत में पड़ जाए। ''अगर हलक से आवाज निकली तो जिंदगी भर नहीं निकलेगी क्योंकि मैं तुम्हारी गर्दन काट दूंगा'', उसने सख्त और ठंडे लहजे में कहा।

आखिरी भूमिका दाऊद को निभानी थी जिसने पैसेंजर सीट का दरवाजा खोला, की नजरों से मारवाड़ी सेट की तरफ देखा और पूछा माल कहां है ? १९ साल के लंबे दुबले लड़के के इस धमकी भरे स्वर और ठंडी निगाह ने मारवाड़ी शेठों की रीड की हड्डियां को कंपा दिया। दोनों ने खामोशी से एक दूसरे की तरफ देखा। अपनी डावांडोल दहशत में जो वक्त वे बर्बाद किया जा रहे थे उसने दाऊद को उतावला कर दिया। उसने उनमें से एक को इतनी जोर का तमाचा झड़ा की उसका चश्मा छिटककर उसकी गोद में जा गिरा और फिर उसने कहा'' मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है तुम्हारे साथ बात करने को''।

इसी के साथ उसने शेठ के हाथ से बैग छीना और उसे खोला। ''और कहां है''? उसने पूछा। शेठ ने कांपते हाथ से कार कि पिछे तरफ इशारा किया। दाऊद ने एजाज को इशारा किया जिसने जाकर हुड उठाया। वहां एक छोटा, काला बक्सा रखा हुआ था जिसमें ताला लगा था।

अब जबकि दोनों बेग दाऊद के हाथों में थे। उसने वक्त बर्बाद नहीं किया और तुरंत ही अपने लड़कों को भागने का इशारा किया, और वे दोनों हक्का- बक्का, थरथराते मारवाड़ी शेठो और टैक्सी ड्राइवर को अपने पीछे छोड़ पैरों-पैर गायब हो गए। आखिरकार जब मारवाड़ी शेठ झटके से उबरे तो उन्होंने पुलिस के पास जाने का फैसला किया। पाईधूनी पुलिस स्टेशन पर उन्होंने डकैती और हथियारबंद लूट की दफा के अंतर्गत अपनी शिकायत, सीआर नंबर ७२५/७४ दर्ज कराई।

दाऊद और उसके आदमियों को मालूम नहीं पड़ा था कि उन्होंने इस दशक की सबसे बड़ी बैंक डकैती की है। यह पहली बार था जब एक ऐसी गुस्ताख डकैती पड़ी थी, जिसे सात ऐसे नौसिखिए लोगों ने अंजाम दिया था जो अपनी किस्मत से ही किया करतब दिखा सकते थे।

उस समय दाऊद अपनी १९वी सालगिरह से ३ हफ्ते पीछे था। जो वह नहीं जानता था कि उसने दरअसल उस पैर पर डाका डाला था जो मेट्रोपोलिटन को -ऑपरेटिव बैंक का था, ना कि हाजी मस्तान का। उस दिन लूट की रकम थी ४,७५,००० रुपए और इस लूट ने अपराध का पूरा फोकस तुरन्त ही एक नौजवान, दाऊद इब्राहिम, पर

केन्द्रित कर दिया। अगले दिन वह शहर के अखबारों की सुर्खियों में था।

जब इब्राहिम कसकर ने दाऊद की करतूत के बारे में सुना तो वह अवाक रह गया। सस्पेंड होने के बाद इब्राहिम कसकर ने कुछ ही साल पहले इस्तीफा दे दिया था, और मुंबई पुलिस की विशिष्ट क्राइम ब्रांच से अनौपचारिक तौर पर आजाद हो गया था, लेकिन पुलिस के हल्को में अभी भी उसकी बहुत इज्जत थी। डोंगरी में, जो कि मुख्य रूप से मुसलमान का गढ़ था। इब्राहिम की बैठक ऐसी जगह थी कि अगर लोगों की कोई समस्या होती तो वह सबसे पहले वही जाते थे। वहां, अपने गुसलखाने के निकास में रुकावट आ जाने की चर्चा से लेकर प्रेमी जोड़ों के भाग जाने की सनसनी या पुलिस प्रताड़ना के मसलों तक, हर चीज पर बात करने की गुंजाइश थी। जब कभी दाउद और सबीर गलियों में किसी मारपीट या किसी दूसरे कुकर्म में मुब्तिला होते तो इब्राहिम शर्मिंदगी महसूस करता, लेकिन उनकी बुराइयों को जवानी का जोश समझकर टाल देता था। लेकिन इस घटना ने उनकी सारी इज्जत और प्रतिष्ठा को ख़ाक में मिला दिया जो उसने बड़ी मेहनत से कमाई थी।

उस शाम, मारे शर्मिंदगी और घबराहट के इब्राहिम अपनी बैठक में भी नहीं पहुंचा। उसने लोगों को मुंह दिखाने और दाउद के बारे में उनके सवालों का जवाब देने की हिम्मत नहीं थी। उसने अपनी इस दूसरी संतान के बारे में की गई उस नबी की भविष्यवाणी याद आ गई, जिसने कहा था कि वह अपनी कामयाबी और ताकत के लिए जाना जाएगा। उसके बेटे ने वाकई ताकत तो हासिल कर ली थी, लेकिन इस प्रक्रिया में उसने उसे बदनाम कर दिया था। इब्राहिम को अपने दोस्तों तक को अपना मुंह चुराना पड़ रहा था।

इस बीच मुंबई पुलिस लड़कों का लगातार पीछा कर रही थी,और जहां गिरोह के दूसरे सदस्य बिना किसी खास मेहनत के पकड़े जा चुके थे, वहीं ये कास्कर बन्धु, दाउद और सबीर पकड़ से बाहर बने हुए थे। इस दुस्साहसिक डकैती के अगले दिन एक कॉन्स्टेबल ने इब्राहीम भाई का दरवाजा खटखटाकर उस से क्राइम ब्रांच के अफसर को मिलने को कहा। इब्राहीम जो जमीन पर उकड़ू बैठा हुआ था, खुद को कोसते हुए अपने दोनों हाथ जमीन पर दे मारे। उसे इसी की आशंका थी। यह तो पता नहीं की क्राइम ब्रांच के बंद दरवाजों के पीछे क्या हुआ, लेकिन उसके दोस्तों का कहना है कि इब्राहिम बुरी तरह से टूटा हुआ था और उसने दोनों बेटों को घसीटकर पुलीस स्टेशन लाने और कानून के हवाले कर देने का इरादा पक्का कर लिया था।

उग्र प्रतीशोध का यह पहला मामला था जिसे दाऊद ने इतनी आसानी से निपटाया था। यह वारदात, यह पल भर का जज्बा और इसके बाद के प्रचार के १५ मिनट, ही शायद वह घटना है जिसने इंसान को जन्म दिया जिसे एक दिन सबसे बड़ा डॉन, दाऊद इब्राहिम बनना था।

इब्राहिम का दोस्तों और खैरख्वाहों का अपना एक नेटवर्क था और उसने उन सबको अपने दोनों बेटों का पता लगाने में लगा दिया। वे दो दिन से घर नहीं आए थे कई दिनों की सघन तलाशी और खोजबीन के बाद, आखिरकार गुस्से से तमतमाते बाप ने सुना कि उसके बेटे भाईखल्ला में अपने एक दोस्त के घर में छिपे हुए हैं। उसने उन्हे दबोचा और घर लेकर आ गया। जब वे अपना सिर झुकाए खड़े थे, और अमीना उन पर चिख – चिल्ला रही थी, उसने तांड पर चढ़कर एक पुरानी स्टील की अलमारी खोली। वह चमड़े का एक मोटा बेल्ट लिए हुऐ निचे उतरा, जिसे वह क्राईम ब्रांच के हेड कांस्टेबल होने के दौरान फक्र से साथ पहना करता था। जब वह नीचे उतरा तो उसके बेटों ने आने वाले अनिष्ट की आशंका से घबराते हुए उसकी तरफ देखा। लेकिन अपनी जगह से इंच भर भी हिलने की उनकी हिम्मत नही हुई।

दाउद और सबीर की पुरे एक दिन और एक रात जो ठुकाई हुई उसे उनके पड़ोसी आज भी याद करते हैं। वे चीख रहें थे और इस भयानक सजा से आसपास के लोग थरथरा रहे थे। इब्राहिम ने दोनों पर लगातार बेल्ट बरसाए, इस इंतहा तक कि दोनों की पीठ से खाल उखड़ गई और खून बहने लगा; दोनों के दोनों कमरे के एक कोने में पड़े ढेर में तब्दील हो गए। इब्राहिम आखिरकार तब थमा जब उसके दोस्तों ने उसे काबू किया और उसके हाथ से बैल्ट छीना।

तब भी बाप को चैन नहीं आया। इसके पहले कि अमीना अपने बेटों को खाना और पानी देती, इब्राहिम उन्हें घसीटता हुआ घर के बाहर लाया, उसे एक टेक्सी में ठूसा और क्राईम ब्रांच में ले गया। उसने अपने बेटों को अफसरो के पैरो पर पटका और अपने हाथ जोड़कर रोने लगा। क्राईम ब्रांच से निकलने से पहले इब्राहिम अफसरों से लगातार माफी मांगता रहा और उनके सामने गिड़गिड़ाया कि वे इस घिनौनी हरकत के लिए उस पर और उसके बेटों पर तरस खाएं।

क्राइम ब्रांच के अफसरो दाउद और सबीर की तरफ देखा, और उनकी बदहाली तथा इब्राहिम की ईमानदारी पर गौर करने के बाद लड़कों को धुनाई के अपने स्टोक से बक्ष दिया। उग्र प्रतीशोध का यह पहला मामला था जिसे दाऊद ने इतनी आसानी से निपटाया था। यह वारदात, यह पल भर का जज्बा और इसके बाद के प्रचार के १५ मिनट, ही शायद वह घटना है जिसने इंसान को जन्म दिया जिसे एक दिन सबसे बड़ा डॉन, दाऊद इब्राहिम बनना था।

ALL WAYS
Tours & Travels

"GO ANYWHERE ANYTIME"

Perna Tower, Opp. Sanjivani Hospital,
Vastrapur Lake, Ahemdabad- 380015
E-mail : all.ways.travels98@gmail.com

24 7

Hatchback, Sedan, Van, Suv, Bus (anything Book Here Contact Us)

AJAYSINH RAJPUT

99746 56466

RAVI KALARIA
99981 56108
70698 56108

RAJ KALARIA
99980 56108
90972 55555

RaviRaj
Tours & Travels

- Air Tickets International & Domestic
- Worldwide Hotel & Luxury Resorts
- Personalized Tour Packages
- Overseas Insurance • Visa Consultation
- Cruise Liners • Passport Service
- Foreign Exchange • Car Hire

408 - 4th Floor, Pride Sapphire, Janvi Park Main Road,
Opp. Golden Super Market, Amin Marg, Rajkot - 360001.
E-mail : ravirajtravels7575@gmail.com

M.D. Mr. Justinbhai Christian
Mo. +91 98258 26886

નર્સિંગ કોર્ષ... નર્સિંગ કોર્ષ.... નર્સિંગ કોર્ષ....

ANGEL INSTITUTE

Supratach Lab, 3rd Floor, Opp. Akila Press,Near Eagle Travels, Moti Tanki Chowk, Rajkot-360001 Mo.96382 34205

Morbi Branch : Near Old Bus Station, Morbi.

AKHIL GUJARAT PARA MEDICAL COUNCIL

AN ISO - 9001 - 2008 CERTIFIED
Regd. by - Guj. Govt. Under S.R.Act & Govt. of India
Under T.M.Act 1999 (T.M. 1577408)
Regd. Under Sociery Reg. Act - 1860

NATIONAL DEVELOPMENT AGENCY

Promoted By Govt. of India

૧૦૦% જોબ ગેરંટી

ધો.૧૦-૧૨ પાસ/નાપાસ, ધો.૧૨ કે કોલેજમાં અભ્યાસ કરતા કે લાયકાત ધરાવતા ભાઈઓ તથા બહેનો એડમીશન લઈ શકે છે...
એડમીશન માટે મળવાનો સમય સવારે ૧૧-૦૦ થી સાંજે ૬-૦૦ સુધી

નર્સિંગ કોર્ષ

(૧) નર્સિંગ આસીસ્ટન્ટ ૧ વર્ષ
(૨) એડવાન્સ નર્સિંગ ૨ વર્ષ
(૩) D.M.L.T. ૧ વર્ષ
(૪) G.N.M. (BANGLORE) 3½ વર્ષ
(૫) O.T. આસિસ્ટન્ટ - ૧ વર્ષ

થિયરી : નિષ્ણાંતો (ડોક્ટર) અને ક્વોલિફાઈડ ટ્યુટર દ્વારા શિક્ષણ
પ્રેક્ટિકલ : મલ્ટી સ્પેશ્યાલીટી હોસ્પિટલ કે જેમાં યોગ્ય પ્રેક્ટિકલ નોલેજ પુરૂં પાડવામાં આવે છે.

નર્સિંગ કોર્ષ માટેની જરૂરી બાબતો :
(૧) ૬૦ બેઠકની હોસ્પિટલ હોવી જરૂરી તથા પેથોલોજી લેબોરેટરીની સુવિધા.
(૨) હવા-ઉજાસવાળા કલાસરૂમ અને બેસવાની વ્યવસ્થા ને અમારી પાસે ઉપલબ્ધ છે.
(૩) બહેનો માટે હોસ્ટેની સુવિધા ઉપલબ્ધ.

સૌરાષ્ટ્રમાં છેલ્લા ૧૬ વર્ષથી નર્સિંગ ક્ષેત્રે સેવા આપતી સરકાર માન્ય એકમાત્ર સંસ્થા...

राज्यसभा सदस्य बन ने पर

हार्दिक बधाई

माननीय

श्री गोविंदभाई लालजीभाई धोलकिया

:: शुभेच्छक ::

कांतिभाई पुनमचंद शाह

अरिहंत बिल्डर्स - सुरत

कल्पेशभाई शाह | धर्मेशभाई पटेल

अशोकभाई डोबरीया | मनीषभाई शाह

सिध्धी कोर्पोरेशन - सुरत

If Undelivered, Please return to :

Raj Complex, Opp. Star Plaza,
Fulchhab Chowk,
Rajkot - 360 001.

To,